



खबर संक्षेप

दूबलधन में घर में घुसकर किसान से मारपीट, केस झज्जर। क्षेत्र के गांव दूबलधन में खेत में काम करके लौट किसान के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। पुलिस को दी शिकायत में किसान संदीप पुत्र जागेराम ने बताया कि वह शुक्रवार की रात करीब बारह बजे खेत में गोड़ी मारकर ट्रैक्टर के साथ अपने आया था। जब उसने अपने घर के अंदर ट्रैक्टर लगाया उसी दौरान गेट

खोलकर गांव का अमरजीत अपनी पत्नी कांता व पुत्र सुरेंद्र के अलावा परिवार के अन्य सदस्यों सोमबीर, कुलजीत व मानसिंह के साथ पहुंचा। इसके बाद कुलजीत ने उसके सिर में पाईप मारा व सोमबीर ने सिर पर कुल्हाड़ी से मारा, सोनू ने पांव में पंचकश व कांता ने लाठी मारकर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। इसके बाद उसके भाई विक्रम द्वारा बीच बचाव कराया गया। संदीप के अनुसार तीन माह पहले खेत के रास्ते को लेकर उनके साथ झगड़ा हुआ था इसी रंजिश के चलते आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

रोहट में युवक वाहन की चपेट में आया बहादुरगढ़। रोहट में सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतक की पहचान परवेज के रूप में हुई है। बताते हैं कि रात को वह रोहट में किसी वाहन की चपेट में आ गया। गंभीर चोट आई। अस्पताल में लेकर गए तो मृत घोषित कर दिया गया। सूचना पाकर आसोदा थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कराई। परिजनों के बयान के बाद पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा दिया।

अवैध हथियार सहित युवक गिरफ्तार



बहादुरगढ़। पुलिस की अपराध जांच शाखा-2 ने अवैध हथियार सहित एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान विजय के रूप में हुई है। मूलतः बिहार से है और फिलहाल यहां सांखोल में रहता है। टीम ने कसार रोड पर ओमेक्स के पास से उसको काबू किया। तलाशी लेने पर उसके पास अवैध हथियार बरामद हुआ। आरोपी के खिलाफ सेक्टर 6 थाने में केस दर्ज किया गया है। आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

250 ग्राम गांजे के साथ युवक काबू, केस दर्ज बहादुरगढ़। पुलिस की अपराध जांच शाखा प्रथम ने गांजे सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान आकाश के रूप में हुई है। कबीर बस्ती का रहने वाला है। पुलिस को सूचना मिली थी कि वह गांजा बेचता है और फिलहाल इसी मंशा से झज्जर रोड पर डाकखाने के पास है। टीम ने मौके पर जाकर आरोपी को काबू किया। उसके पास से 250 ग्राम गांजा बरामद हुआ। आरोपी के खिलाफ सिटी थाने में केस दर्ज हुआ है।

महराणा में अघेड़ ने फंडा लगाया झज्जर। क्षेत्र के गांव महराणा में एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान करीब 48 वर्षीय सुनील के तौर पर हुई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार सुनील प्राइवेट काम करता था। वह विवाहित था और दो पुत्रों का पिता था। परिजनों ने बताया कि वह पिछले कुछ दिनों से मानसिक रूप से परेशान चल रहा था इसी परेशानी के चलते उसने आत्महत्या की है। मृतक के पुत्र अमन के बयान पर पुलिस ने इतिहासिकीय कार्रवाई अमल में लाते हुए पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया।

बाइक को टक्कर मारकर पलटा ट्राला नीचे दबे बस चालक की दर्दनाक मौत

■ निजी स्कूल की बस चलाता था धीरज ■ हादसे के बाद ट्राला चालक फरार

हरिभूमि न्यूज || झज्जर

शहर के कोसली डाइवर्सन मार्ग के नजदीक तेज रफ्तार ट्राला ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि जहां ट्राला सड़क किनारे पलट गया वहीं मोटरसाइकिल चालक भी ट्राले के नीचे दब गया जिस कारण उसकी मौत हो गई। ट्राला चालक इस बीच ट्राला छोड़ कर मौके से फरार हो गया।

शनिवार की सुबह हुए इस हादसे की सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को ट्राले के नीचे निकलवाकर उसे पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल भिजवाया। मृतक की पहचान जिले के गांव खखाणा निवासी करीब 48 वर्षीय धीरज पुत्र नंदपाल के तौर पर हुई है। पुलिस ने मृतक के भाई महिपाल की शिकायत पर आरोपी ट्राला चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। इस संबंध में पुलिस द्वारा नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

परिजनों की शिकायत पर केस
पुलिस को दी शिकायत में मृतक के भाई महिपाल ने बताया कि वे छह भाई व एक बहन हैं। उसका भाई धीरज दानपुर के एक निजी स्कूल की बस चलाता था और



झज्जर। हादसे के बाद घटना स्थल एकत्रित हुए लोग।



मौके पर मौजूद लोग

उसे झज्जर खड़ी करता था। वह शनिवार की सुबह करीब सवा छह बजे बस लाने के लिए घर से मोटरसाइकिल पर झज्जर आया था। करीब आठ बजे गांव के एक व्यक्ति ने उसके भाई के एक्सीडेंट की सूचना दी। जिसके बाद वे मौके पर पहुंचे तो उसके

भाई धीरज का शव ट्राला के नीचे दबा हुआ था। महिपाल ने बताया कि ट्रक चालक ने रांग साइड आकर उसके भाई की मोटरसाइकिल को टक्कर मारी है जिस कारण उसकी मौत हुई है।

छारा में बेटी को पीटा पिता पर चढ़ा दी गाड़ी

बहादुरगढ़। गांव छारा में एक बेटी से मारपीट करने तथा उसके पिता पर गाड़ी चढ़ाने का मामला सामने आया है। महिला के पति व सास, ससुर पर आरोप है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामले में छानबीन शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में छारा के निवासी भूपेंद्र का कहना है कि इस साल फरवरी माह में उसने अपनी बेटी का विवाह दिल्ली के निवासी भारत के साथ किया था। शादी के कुछ समय बाद ही मेरी बेटी को दामाद व ससुरालियों द्वारा तंग किए जाने लगे। छोटी छोटी बात पर सास, ससुर व दामाद मारपीट करते। हमने कई बार उनसे बातचीत की लेकिन वे अपनी हरकतों से बाज नहीं आए। गत पांच जून की रात पीने 12 बजे दामाद, उसकी मां व पिता हमारी बेटी को यहां लेकर आए। हमारे घर का दरवाजा खटखटया और अंदर घुस गए। फिर कहने लगे कि आपकी बेटी हमारे किसी काम की नहीं है। इतना कहकर हमारे सामने ही हमारी बेटी के साथ मारपीट की। मैंने व मेरी पत्नी ने बेटी को उनसे हटवाया। इसके बाद वे तीनों अपनी गाड़ी में अंदर घुस गए। जैसे ही मैं बाहर निकला तो दामाद को उसके माता, पिता ने मुझ पर गाड़ी चढ़ाने के लिए कहा। दामाद ने गाड़ी से मुझे टक्कर मार दी और मेरे बाएं पांव पर टायर चढ़ा दिया। फिर धमकी देकर भाग गए। इसके बाद मुझे अस्पताल में ले जाया गया। उधर, मांडौली चौकी पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि जांच की जा रही है।



जूतों के गोदाम में आग लगने से नुकसान



झज्जर। आग बुझाने के बाद स्थिति का जायजा लेते दुकानदार।

हरिभूमि न्यूज || झज्जर

शहर के पुराने बस स्टैंड के सामने स्थित जगदंबा मार्केट के एक गोदाम में शनिवार सांय करीब छह बजे

अचानक आग लग गई। जब दुकानदार को पता चला तो उसने फायर ब्रिगेड को सूचना दी तथा स्वयं दुकानदारों के साथ आग बुझाने का प्रयास करने लगे। इसके उपरांत दुकानदारों व फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियों ने पहुंच कर सहज ही आग पर काबू पा लिया।

दुकानदार सन्नी ने बताया कि उसने अपनी दुकान के साथ लगती दुकान में गोदाम बनाया हुआ है। वे गोदाम में नए जूतों के अलावा कबाड़ का सामान भी पड़ा था और



वे उसका शटर अक्सर बंद रखते थे। किसी व्यक्ति ने दुकान के बाहर पड़े कूड़े में आग लगा दी थी जो हवा या अन्य कारणों के चलते अंदर पहुंच गई। जब उन्होंने शटर के अंदर धुआं उठते देखा तो गोदाम खोल आग पर काबू पाया गया। सन्नी के अनुसार इस घटना में उसका करीब एक से डेढ़ लाख रुपये का नुकसान हो गया।

ईआरवी को टक्कर मारने के बाद पुलिस कर्मियों को धक्का देकर भागे कार सवार

■ पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया, सेक्टर छह थाने में केस दर्ज

हरिभूमि न्यूज || बहादुरगढ़

शुक्रवार रात को रोहतक-दिल्ली रोड पर एक कार ने पुलिस की गाड़ी को टक्कर मार दी। जब पुलिस ने आरोपियों को घेरा तो वे अपनी गाड़ी छोड़कर भाग गए। हालांकि कुछ समय बाद वे तलाशकर गिरफ्तार कर लिए गए। आरोपियों के खिलाफ सेक्टर-6 पुलिस थाने में केस दर्ज किया गया है।

ये था मामला

शिकायत में ईएचसी संदीप ने कहा है कि देर रात को वह ईआरवी पर तैनात था। इसी दौरान सूचना मिली कि एक कार में दो संदिग्ध युवक बैठे

हैं। वह कार दिल्ली-रोहतक रोड से गुजर रही है। इसलिए हमने ओमेक्स गेट के पास आने जान वाली गाड़ियों पर निगरानी शुरू कर दी। जैसे ही टिगोर कार आई तो हमने रोकने का इशारा किया। वह कार हमें क्रॉस करके कुछ आगे बढ़ी और फिर तेज गति से पीछे आई।

कार ने हमारी ईआरवी गाड़ी को टक्कर मार दी। जिससे सरकारी गाड़ी क्षतिग्रस्त हो गई। इसके बाद वे रोहतक की ओर भागने लगे। केएमपी थाना प्रभारी महेश कुमार की टीम की मदद से किसान चौक पर उन्हें रोका गया। आरोपियों की पहचान नरेंद्र निवासी छोटाराम पार्क और प्रीतम निवासी शक्ति नगर के

सरकारी इयूटी में बाधा डालने का आरोप

उधर, सेक्टर 6 थाना पुलिस ने आरोपियों की गाड़ी कब्जे में ले ली है। उनके खिलाफ सरकारी इयूटी में बाधा उत्पन्न करने, सरकारी वाहन को नुकसान पहुंचाने सहित विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। जांच अधिकारी रणदीप सिंह का कहना है कि दोनों आरोपी गिरफ्तार कर लिए हैं। मामले में जांच की जा रही है।

रूप में हुई। दोनों ने हमारे साथ धक्का मुक्की की और अंधेरे का फायदा उठाकर अपनी गाड़ी छोड़कर भाग गए।

टांडाहेड़ी में करंट लगने से राष्ट्रीय पक्षी की मौत

बहादुरगढ़। गांव टांडाहेड़ी में करंट लगने से राष्ट्रीय पक्षी मोर की मृत्यु हो गई। पुलिस को मामले से अवगत कराने के बाद ग्रामीण युवाओं द्वारा मोर को अंतिम विदाई दी गई। जानकारी के अनुसार, गांव से गुजर रही हाइड्रेशन लाइन की चपेट में शनिवार की सुबह मोर आ गया था। करंट से वह झुलस गया। जब तक किसी की नजर पड़ती, उसकी सांस थम चुकी थी। कुछ ही देर में गांव के काफी युवा मौके पर एकत्र हो गए। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची। गांव के लोगों ने बिजली निगम के अधिकारियों और पुलिस को मामले से अवगत कराया। इसके बाद मोर को आदर सम्मान के साथ मिट्टी दे दी गई। गांव में सप्ताह भर में मोर की मौत की यह दूसरी घटना बताई जा रही है। इससे पहले भी करंट लगने व कुत्तों द्वारा नौचने से इलाके में कई मोरों की जान जा चुकी है। बिजली की हाइ पावर वाली खुली लाइनें मोरों के लिए खतरा बनी हैं।



गंदगी से सड़ रहा शहर का हर कोना, सोशल मीडिया पर भड़स निकाल रहे शहरवासी

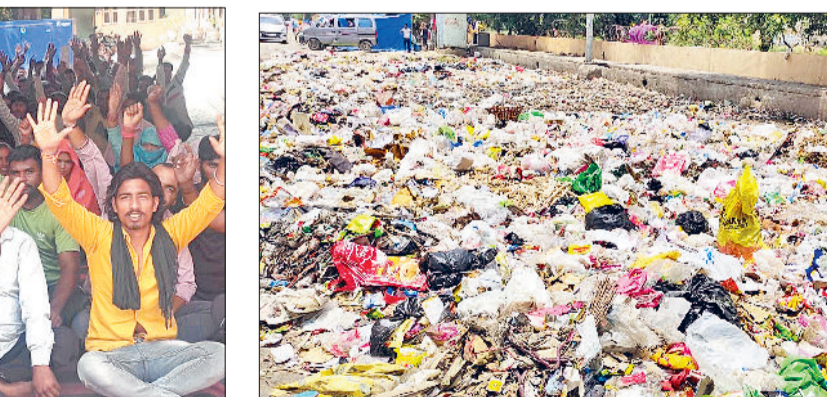
■ सफाई कर्मियों की हड़ताल से बिगड़ रहे हालात ■ मांगों को लेकर पांचवें दिन भी नारेबाजी



बहादुरगढ़। धरनारत कर्मचारियों के साथ एआईयूटीयूसी के कार्यकर्ता।

हरिभूमि न्यूज || बहादुरगढ़

सफाई कर्मचारियों की समस्या के समाधान की दिशा में फिलहाल कोई कदम उठता नजर नहीं आ रहा। लगातार पांचवें दिन भी हड़ताल जारी रही। हर रोज की तरफ शनिवार को भी कर्मचारियों ने नारेबाजी की और शाम तक धरना देने के बाद घर लौट गए। हड़ताल के चलते शहर के हालात बिगड़



बहादुरगढ़। कर्मचारियों की हड़ताल के चलते शहर में फैला कूड़ा।

गए हैं। हड़ताली कर्मचारियों के समर्थन में कुछ कर्मचारी संगठन भी आगे आए हैं। मजदूर कल्याण मंच के नेता लालजी अपने कार्यकर्ताओं सहित धरना स्थल पर पहुंचे और हड़ताली सफाई कर्मियों को समर्थन दिया। उन्होंने कहा कि ठेकेदार के अधीन कार्यरत इन सफाई कर्मचारियों का वेतन काम के मुकाबले बेहद कम है। वह भी समय पर नहीं मिल रहा।

तीन माह से नहीं मिला वेतन

तीन माहों वेतन न मिलने के कारण वे कर्मचारी आर्थिक और मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं। ठेकेदारी व्यवस्था के तहत बीजेपी सरकार ने मजदूरों की ये हालत बना दी है। उनसे काम ले लिया जाता है और मेहनताना देने के नाम पर उनसे संघर्ष कराया जाता है। जल्द से जल्द कर्मचारियों का बकाया वेतन दिया जाए। सफाई कर्मचारियों की हड़ताल के चलते शहर गंदगी से सड़ रहा है। हर गली, मोहल्ले में गंदगी से परेशान लोग अव्यवस्था को कोस रहे हैं। इंटरनेट मीडिया पर भी यह मामला चर्चा का विषय बना हुआ है। नवीन ने कहा कि तमाम जन प्रतिनिधियों को इस मामले में आगे आकर कर्मचारियों की मदद करनी चाहिए।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)

NAAC
A
GRADE

- NAAC 'A' GRADE INSTITUTE
- NBA ACCREDITED PROGRAMMES
B.TECH ECE, ME & MBA
- STRONG ALUMNI NETWORK
- AN AUTONOMOUS INSTITUTE
- Industry Oriented Curriculum
- Degree Conferred by MDU, Rohtak
- Advance Certification Programmes

Rankings TIMES ENGINEERING
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY!

RANKED #19 In North India
RANKED #39 Pvt. Institutes in India
RANKED #41 Across India
RANKED #62 Placement Across India

MEGA JOB FAIR-2025
28/06/2025 | 9:30 am onwards
Register at: www.gangainstitute.com

- GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
- GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
868400916 | www.gangainstituteofeducation.com

ADMISSIONS OPEN 2025-26

B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DATA SC.), CSE (AI & ML)
ECE, MECHANICAL, ELECTRICAL, CIVIL
FIRE TECHNOLOGY AND SAFETY
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA
B.ARCH | M.ARCH | M.ED | B.ED

FOR WORKING PROFESSIONALS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY, CSE),
M.TECH (CSE), MBA

8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com

Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi
+91-9654292902, 03, 04

किसानों को सिर्फ 4% की दर से मिलेगा 5 लाख रु. तक का लोन

- केसीसी योजना के लिए लोन लेना बहुत आसान, मिल रहे बड़े फायदे
- किसान, चाहे वह जमीन का मालिक हो या बटाइदार, कर सकते हैं आवेदन
- केट सरकार ने लोन सीमा को 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपये तक किया
- खेती, पशुपालन या मछली पालन के लिए ले सकते हैं किफायती लोन
- किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत 1998 में हुई थी
- इसका मकसद किसानों को खेती की जरूरतों के लिए सस्ता लोन उपलब्ध कराना

जानकारी

बिजनेस डेस्क

किसानों के लिए खेती को आसान और किफायती बनाने के मकसद से शुरू की गई किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना अब और भी फायदेमंद हो गई है। केंद्रीय बजट 2025-26 में केंद्र सरकार ने इस योजना की लोन सीमा को 3 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया था। इतना ही नहीं, इसकी ब्याज दर भी 4% सालाना है, जो किसानों के लिए बड़ा लाभ है। इसके साथ ही सरकार ने इस योजना की ब्याज सहायता (इंटरस्ट सब्सिडी) को वित्त वर्ष 2025-26 तक बढ़ाने का फैसला किया है, जिससे किसानों को सस्ता लोन मिलना जारी रहेगा। यह खबर उन लाखों किसानों के लिए खुशखबरी है, जो खेती, पशुपालन या मछली पालन के लिए किफायती लोन की तलाश में हैं। आइए, इस योजना को विस्तार से समझते हैं और जानते हैं कि इसे लेना कितना आसान है।

व्या है किसान क्रेडिट कार्ड योजना

किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत 1998 में हुई थी। इसका मकसद था किसानों को उनकी खेती की जरूरतों के लिए सस्ता और आसान लोन उपलब्ध कराना। इस योजना को भारत सरकार, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) और नाबार्ड ने मिलकर शुरू किया था। यह कार्ड किसानों को एक क्रेडिट लाइन देता है, जिसका इस्तेमाल वे बीज, खाद, कीटनाशक, कृषि उपकरण खरीदने पशुपालन और मछली पालन जैसे कामों के लिए कर सकते हैं। इस कार्ड की खासियत यह है कि यह 5 साल की वैलिडिटी के साथ आता है और समय पर लोन चुकाने पर ब्याज में छूट भी मिलती है।



व्या है अतिरिक्त फायदे?

किसान क्रेडिट कार्ड के साथ कई अतिरिक्त फायदे भी मिलते हैं। मसलन, अगर फसल प्राकृतिक आपदा या कीटों के कारण खराब हो जाती है, तो बीमा कवरेज मिलता है। इसके अलावा, अगर किसान अपने केसीसी खाते में पैसे जमा करता है, तो उसे बचत खाते की तरह ब्याज भी मिलता है। साथ ही, कई बैंक केसीसी के साथ रुपे डेबिट कार्ड भी देते हैं, जिससे किसान आसानी से मंडियों या इनपुट डीलरों के साथ लेन-देन कर सकते हैं।

बढ़ गई सीमा

हाल ही में सरकार ने किसान क्रेडिट कार्ड के तहत लोन की अधिकतम सीमा को 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपये कर दिया है। यह फैसला 2025 के बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने लिया, जिसका मकसद किसानों को उनकी बढ़ती जरूरतों के लिए ज्यादा आर्थिक सहायता देना है। इस लोन पर सामान्य ब्याज दर 7% सालाना है, लेकिन सरकार 2% की ब्याज सहायता देती है। इसके अलावा, अगर किसान समय पर लोन चुका देते हैं तो उसे 3% की अतिरिक्त छूट मिलती है। इस तरह प्रभावी ब्याज दर सिर्फ 4% रह जाती है। यह सुविधा खेती के साथ-साथ मछली पालन और पशुपालन करने वाले किसानों के लिए भी उपलब्ध है।

बढ़ाई गई ब्याज सहायता की डेडलाइन

केंद्र सरकार ने हाल ही में संशोधित ब्याज सहायता योजना को वित्त वर्ष 2025-26 तक बढ़ाने की मंजूरी दी है। इसका मतलब है कि किसानों को अगले वित्त वर्ष तक 4% की रियायती ब्याज दर पर लोन मिलता रहेगा। यह फैसला मई 2025 में केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में लिया गया। इस कदम से देश के करीब 7.7 करोड़ किसानों, मधुआरों और डेयरी किसानों को फायदा होगा। यह योजना सुनिश्चित करती है कि किसानों को कम लागत पर कार्यशील पूंजी मिले, ताकि वे अपनी खेती को और बेहतर कर सकें।

आसान है केसीसी बनवाना

किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना बेहद आसान है। कोई भी किसान, चाहे वह जमीन का मालिक हो, किरायेदार किसान हो या बटाईदार, इसी इच्छा के लिए आवेदन कर सकता है। इसके लिए जरूरी डॉक्यूमेंट्स में आधार कार्ड, पैन कार्ड, जमीन के डॉक्यूमेंट और फसल की जानकारी शामिल होती है। आवेदन को प्रकिया ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध है। ऑनलाइन आवेदन के लिए किसान को पिएम किसान योजना की वेबसाइट (pmkisan.gov.in) पर जाना होगा। वहां से केसीसी का फॉर्म डाउनलोड कर सकते हैं। फॉर्म में जमीन और फसल की जानकारी भरकर, जरूरी डॉक्यूमेंट्स के साथ इसे नजदीकी बैंक में जमा करना होता है।

कैसे करें इस्तेमाल?

किसान क्रेडिट कार्ड एक रिवायलिंग क्रेडिट खाते की तरह काम करता है। इसका मतलब है कि किसान जरूरत के हिसाब से पैसे निकाल सकता है और चुकाने के बाद फिर से लोन ले सकता है। लोन की राशि फसल की कटाई और बिक्री की अवधि के आधार पर चुकानी होती है। किसान को साल में दो बार ब्याज और एक बार पूरी लोन राशि जमा करनी होती है। अगर समय पर भुगतान किया जाता है, तो अगले ही दिन नया लोन लिया जा सकता है। यह लचीलापन किसानों के लिए बड़ा फायदा है, क्योंकि वे अपनी जरूरतों के हिसाब से पैसे का इस्तेमाल कर सकते हैं।

कौन उठा सकता है फायदा

यह योजना सिर्फ खेती करने वालों तक सीमित नहीं है। पशुपालन, मछली पालन, हागवानी या अन्य कृषि से जुड़े काम करने वाले लोग भी इसके लिए पात्र हैं। इसके अलावा, स्वयं सहायता समूह और संयुक्त देवता समूह भी इस कार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। सरकार का मकसद है कि ज्यादा से ज्यादा किसानों को इस योजना का लाभ मिले, ताकि वे अपनी खेती को आधुनिक और लाभकारी बना सकें।

सिखोरिटी की जरूरत नहीं

अगर ऑनलाइन प्रकिया में दिक्कत हो, तो किसान अपने नजदीकी बैंक शाखा में जाकर सीधे आवेदन कर सकता है। बैंक में एक साधारण फॉर्म भरना होता है, जिसमें जमीन के कागजात और पहचान पत्र जमा करने होते हैं। आमतौर पर, अगर सभी डॉक्यूमेंट्स सही हैं, तो 5 से 7 दिनों के अंदर बैंक लोन स्वीकृत कर देता है। इसके अलावा, 1.6 लाख रुपये तक के लोन के लिए कोई सिखोरिटी देने की जरूरत नहीं होती। 3 लाख रुपये से ज्यादा के लोन के लिए जमीन या अन्य संपत्ति को सिखोरिटी के तौर पर रखना पड़ सकता है। साथ ही, इस कार्ड के साथ किसानों को भरकर, जरूरी डॉक्यूमेंट्स के साथ इसे नजदीकी बैंक में जमा करना होता है।



5 साल में 4 गुना रिटर्न, कम खर्च में तिहरा बेनिफिट दिया

- 5 स्टार रेटिंग, कम खर्च वाले टॉप 5 इक्विटी फंड्स में तीन एचडीएफसी म्यूचुअल फंड के
- इन स्कीम्स ने 5 साल में 32% तक रिटर्न देकर निवेशकों की दौलत कई गुना तक कर दी
- इन सभी फंड का एक्सपेंस रेशियो यानी निवेश का खर्च 1 फीसदी से भी काफी कम यानी फायदा

बिजनेस डेस्क। इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में पैसे लगाने वाले निवेशकों को हमेशा ऐसी स्कीम की तलाश रहती है, जिनकी रेटिंग अच्छी हो और जो कम से कम खर्च में हाई रिटर्न देने की क्षमता रखते हों। हम यहां ऐसे ही 5 इक्विटी फंड्स की जानकारी देने जा रहे हैं, जिनमें 5 स्टार रेटिंग मिली हुई है और जो पिछले 5 साल में 32% तक एवरेज एनुअल रिटर्न दे चुके हैं। इतना ही नहीं, इन सभी फंड का एक्सपेंस रेशियो यानी निवेश का खर्च 1 फीसदी से भी काफी कम है। यानी इनमें निवेश करने वालों को बेस्ट रेटिंग, बेस्ट रिटर्न और कम खर्च का तिहरा बेनिफिट मिल रहा है। इन टॉप 5 में से तीन स्कीम्स एचडीएफसी म्यूचुअल फंड की हैं। ये सभी इक्विटी फंड, निवेश के मामले में फ्लेक्सिबल इनवेस्टमेंट स्ट्रेटजी पर चलते हैं। इस इनवेस्टमेंट स्ट्रेटजी में फंड मैनेजर लाज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप स्टॉक्स में फंड एलोकेशन अपनी मर्जी से तय करते हैं। इससे उन्हें बाजार के रुझान के हिसाब से एलोकेशन करके बेहतर रिटर्न हासिल करने का मौका मिलता है। साथ ही हर मार्केट सेगमेंट में निवेश करने की वजह से पोर्टफोलियो के डायवर्सिफिकेशन का लाभ भी मिलता है। जिन लोगों के पोर्टफोलियो में इक्विटी स्कीम्स की संख्या ज्यादा नहीं रहती उन्हें आमतौर पर एक ही स्कीम में बेहतर डायवर्सिफिकेशन के लिए ऐसे ही फंड्स में निवेश करने की सलाह दी जाती है।

फ्लेक्सिबल स्ट्रेटजी वाले टॉप इक्विटी फंड

हम यहां जिन टॉप 5 इक्विटी फंड्स की चर्चा कर रहे हैं, वे सभी इसी फ्लेक्सिबल निवेश रणनीति को फॉलो करते हैं। दरअसल, किसी भी मार्केट सेगमेंट वाले स्टॉक्स में निवेश की छूट के कारण ही वेल्थ रिसर्च ने एचडीएफसी फोकरड 30 फंड, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंडिया इक्विटी एफओएफ और एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स फंड (इक्विटी प्लान) को भी फ्लेक्सि कैप फंड की लिस्ट में शामिल किया है। इस लिस्ट में परना लिस्टेड पब्लिक लिमिटेड फंड और एचडीएफसी फ्लेक्सि कैप फंड जैसे विशाल एसेट मैनेजमेंट वाली स्कीम्स भी शामिल हैं। इन सभी फंड्स को वेल्थ रिसर्च ने 5 स्टार रेटिंग दी गई है।

- एचडीएफसी फोकरड 30 फंड (डायरेक्ट प्लान) एम.एस.**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 31.95%
 - 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 26.26%
 - एक्सपेंस रेशियो : 0.61%
 - एसेट मैनेजमेंट : 19,551 करोड़ रुपये
 - 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 4,00,361 रुपये
 - 10 हजार की मंथली SIP से 5 साल में जमा हुए : 11,62,044 रुपये
- एचडीएफसी फ्लेक्सि कैप फंड (डायरेक्ट प्लान)**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 31.22%
 - 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 25.41%
 - एक्सपेंस रेशियो : 0.73%
 - एसेट मैनेजमेंट : 75,724 करोड़ रुपये
 - 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 3,89,267 रुपये
 - 10 हजार की मंथली एसआईपी से 5 साल में जमा हुए : 11,30,375 रुपये
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंडिया इक्विटी एफओएफ (डायरेक्ट प्लान)**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 23.09%
 - 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 23.09%
- एक्सपेंस रेशियो : 0.63%**
- एसेट अंडर मैनेजमेंट : 178 करोड़ रुपये**
- 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 3,79,592 रुपये**
- 10 हजार की मंथली एसआईपी से 5 साल में जमा हुए : 10,86,103 रुपये**
- एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स फंड इक्विटी प्लान**
- 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 29.55%**
- 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 22.52%**
- एक्सपेंस रेशियो : 0.74%**
- एसेट अंडर मैनेजमेंट : 6473 करोड़ रुपये**
- 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 3,65,209 लाख रुपये**
- 10 हजार की मंथली एसआईपी से 5 साल में जमा हुए : 10,46,988 रुपये**
- परना पारिख फ्लेक्सि कैप फंड-डायरेक्ट प्लान**
- 5 साल का औसत सालाना रिटर्न : 27.34%**
- 3 साल का औसत सालाना रिटर्न : 22.21%**
- एक्सपेंस रेशियो : 0.63%**
- एसेट अंडर मैनेजमेंट : 103,866 करोड़ रुपये**
- 1 लाख का निवेश 5 साल में हुआ : 3,43,054 रुपये**
- 10 हजार की मंथली एसआईपी से 5 साल में जमा : 10,31,937 रुपये**

एकमुश्त और एसआईपी पर शानदार रिटर्न
ऊपर दिए आंकड़ों से साफ है कि इन टॉप 5 म्यूचुअल फंड्स में पिछले 5 साल के दौरान अपने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिए हैं। फिर चाहे वो वन-टाइम इनवेस्टमेंट हो या रिटायरमेंट इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये किया गया निवेश, लेकिन निवेशकों को यह याद रखना चाहिए कि इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश के साथ मार्केट रिस्क जुड़ा रहता है। इसलिए निवेश का फैसला करने से पहले अपनी रिस्क लेने की क्षमता को जरूर ध्यान में रखें। (डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का मकसद सिर्फ जानकारी देना है। निवेश की सिफारिश करना नहीं। म्यूचुअल फंड्स का फिखरा रिटर्न मॉडिफाई नहीं जा सकती है। निवेश के फैसले अपने निवेश सलाहकार की राय लेकर ही करें।)

कम खर्च में बढ़िया कमाई करवाने वाले 5 स्मॉल कैप फंड कर सकते मालामाल

35% से 39% तक रहा 5 साल का एनुअल रिटर्न, निवेशकों के पैसों को साढ़े चार गुना से 5 गुना तक बढ़ाया बेहद कम एक्सपेंस रेशियो के साथ दे रहे अच्छा रिटर्न

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स पर स्टॉक मार्केट की उथल-पुथल का ज्यादा असर पड़ता है। यानी बाजार में गिरावट आने पर उनके ज्यादा तेजी से गिरने की आशंका रहती है, लेकिन इसके साथ ही रिकवरी होने पर उनमें मुनाफे की गुंजाइश भी अधिक होती है। यही वजह है कि स्मॉल कैप फंड्स को हाई रिस्क, हाई रिटर्न इनवेस्टमेंट माना जाता है, लेकिन हम इस रिपोर्ट में 5 ऐसे स्मॉल कैप फंड्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्हें पिछले 5 साल के प्रदर्शन के आधार पर लो कॉस्ट, हाई रिटर्न यानी कम खर्च में मोटा मुनाफा देने वाला कहा जा सकता है। इन सभी फंड्स का 5 साल का औसत सालाना रिटर्न 35% से 39% तक रहा है, वह भी काफी कम लागत यानी एक्सपेंस रेशियो के साथ। जिन 5 स्मॉल कैप फंड्स की जानकारी दी है, उनका 5 साल का एवरेज एनुअल रिटर्न 35.81% से लेकर 39.61% तक है। इस हाई रिटर्न की बदौलत इन फंड्स ने 1 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश को 5 साल में 4.65 गुना से लेकर 5.3 गुना तक कर दिखाया है। इतना ही नहीं, इन स्मॉल कैप फंड्स में अगर किसी ने 5 साल तक हर महीने 5,000 रुपये का निवेश किया होगा, तो उसकी मौजूदा फंड वैल्यू भी 5.74 लाख रुपये से लेकर 6.57 लाख रुपये तक हो गई होगी। इन सभी फंड्स को वेल्थ रिसर्च ने 5 या 4 स्टार की रेटिंग दी है और इनके डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेशियो 0.34% से 0.65% के बीच है, जिसे काफी किफायती माना जा सकता है।



- निपॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 39.61%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.65%
 - 1 लाख रुपये के लॉन्गम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5.3 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 6,15,113 रुपये (एन्युअलइज्ड रिटर्न : 29.21%)
- बंधन स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 38.21%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.39%
 - 1 लाख रुपये के लॉन्गम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5.04 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 6,57,581 रुपये (एन्युअलइज्ड रिटर्न : 32.04%)
- एडलाइव इन स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 36.35%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.43%
 - 1 लाख रुपये के लॉन्गम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 4.71 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 5,74,266 रुपये (एन्युअलइज्ड रिटर्न : 26.32%)
- टाटा स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 35.98%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.34%
 - 1 लाख रुपये के लॉन्गम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 4.65 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 5,83,439 रुपये (एन्युअलइज्ड रिटर्न : 26.98%)
- इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान**
 - 5 साल का औसत सालाना रिटर्न (डायरेक्ट प्लान) : 35.81%
 - एक्सपेंस रेशियो (डायरेक्ट प्लान) : 0.44%
 - 1 लाख रुपये के लॉन्गम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 4.62 लाख रुपये
 - 5000 रुपये मंथली एसआईपी की 5 साल में फंड वैल्यू : 6,16,477 रुपये (एन्युअलइज्ड रिटर्न : 29.31%)

स्मॉल कैप में निवेश से पहले रिस्क समझ लें

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स लॉन्ग टर्म में औसत से काफी बेहतर रिटर्न देने के लिए जाने जाते हैं। लेकिन इन पर बाजार की उथल-पुथल का ज्यादा असर पड़ता है। इसी वजह से इन्हें काफी अधिक जोखिम की रेटिंग दी जाती है, लेकिन जो निवेशक हाई रिटर्न के लिए ज्यादा रिस्क लेने की क्षमता रखते हैं, वे अपने पोर्टफोलियो में इन्हें जगह दे सकते हैं। अगर सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये लंबी अवधि तक निवेश किया जाए, तो इस रिस्क को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। ऐसे में निवेशकों को कम से कम 7 साल या उससे ज्यादा समय के लिए निवेश जारी रखना चाहिए। साथ ही स्मॉल कैप में एक्सपोजर 10-15 फीसदी से ज्यादा नहीं होना चाहिए। इसलिए अगर आप लंबी अवधि के लिए निवेश की सोच रहे हैं और ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं, तो स्मॉल कैप फंड्स अच्छा रिटर्न देने का दम रखते हैं, लेकिन ध्यान रखें कि ये फंड्स वोलेटाइल होते हैं और शॉर्ट टर्म में उतार-चढ़ाव ला सकते हैं।

रिटायरमेंट की रेस जीतनी है तो पहले से करें तैयारी



आखिरी वक्त में दौड़ने से नहीं बनेगा काम, फेल हो सकती है पूरी प्लानिंग
युवाओं के लिए रिटायरमेंट का वक्त मले ही दूर हो, लेकिन जल्दी करें तैयारी जितनी जल्दी शुरू करेंगे, बाद में उतनी ही आसानी होगी

सुझाव बिजनेस डेस्क

अगर आप भी चाहते हैं कि आपका बुढ़ापा पूरी मस्ती में कटे तो रिटायरमेंट के लिए बेहतर प्लानिंग करें। इससे आपको असानी रहेगी और समय रहते आप रिटायरमेंट के लिए अच्छा खासा पैसा जुटा लेंगे। रिटायरमेंट की प्लानिंग ऐसी दौड़ है, जिसमें जीतना है तो शुरुआत समय रहते करनी होगी। अगर आप आखिरी वक्त में तैयारी शुरू करेंगे, तो न तो सही ढंग से पैसों का इंतजाम हो पाएगा और न ही रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी सुकून भरी बन पाएगी। कामकाजी जिंदगी के शुरुआती दौर में रिटायरमेंट भले ही काफी दूर का लक्ष्य नजर आता हो, लेकिन उसके लिए जितनी जल्दी तैयारी शुरू की जाएगी, बाद में उतनी ही आसानी होगी। इसके लिए समय रहते अमाउंट जुटा लेना जरूरी है। तभी आपका बुढ़ापा बिना किसी टेंशन के कट सकेगा। वरना बड़ी परेशानी हो सकती है।

जल्द शुरुआत बड़ा फायदा

जानकारों का कहना है कि रिटायरमेंट प्लानिंग को आखिरी समय की तैयारी के तौर पर नहीं, बल्कि आदत के रूप में अपनाना चाहिए। जो लोग शुरुआत से ही छोटी-छोटी रकम निवेश करना शुरू कर देते हैं, उन्हें इससे समय रहते आप अच्छा खासा पैसा जुटाकर अपने जीवन का समृद्ध बना सकते हैं। उनका यह भी मानना है कि रिटायरमेंट की तैयारी एक लंबी प्रकिया है और यह एक बार का काम नहीं, बल्कि लगातार चलने वाली आदत होनी चाहिए। अगर आप अपने करियर के शुरुआती सालों में ही निवेश की आदत डाल लेते हैं, तो समय के साथ आपका फंड अपने आप बढ़ता चला जाएगा।

रेगुलर इनवेस्टमेंट

रिटायरमेंट फंड के लिए हर महीने एक तय रकम अलग रखना जरूरी है। यह रकम आपकी आमदनी के अनुसार कम ज्यादा हो सकती है, लेकिन इसे एक नियम की तरह अपनाना चाहिए। इससे यह प्लानिंग सिर्फ कागज पर नहीं, आपकी वित्तीय आदतों में शामिल हो जाएगी। हर महीने रिटायरमेंट के लिए निवेश करने वाली रकम भी लंबे समय में बड़ा फंड तैयार कर सकती है, बशर्ते आप रेगुलर इनवेस्टमेंट का सिलसिला बनाए रखें।

सही एसेट एलोकेशन है बेहद जरूरी

रिटायरमेंट के लिए निवेश करते वक्त सिर्फ सेविंग अकाउंट या फिक्स्ड डिपॉजिट पर भरोसा करना ठीक नहीं। आपको अपनी रिस्क लेने की क्षमता के हिसाब से इक्विटी और डेट जैसे विकल्पों के बीच संतुलन बना कर निवेश करना चाहिए। नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) इस मामले में एक बेहतर विकल्प है, क्योंकि इसमें आप अपनी रिस्क प्रोफाइल के मुताबिक इक्विटी, डेट और गवर्नमेंट बॉन्ड्स का चुनाव कर सकते हैं।

इंफ्लेक्शन के साथ बढ़ाते चलें निवेश

जैसे-जैसे आपकी चैलेंजें बढ़ती हैं, वैसे ही रिटायरमेंट के लिए की जाने वाली निवेश रकम भी बढ़ानी चाहिए। यह अपने पर्यूर को और मजबूत बनाने का एक सबसे अच्छा तरीका है। हर साल अपने रिटायरमेंट

पोर्टफोलियो का रिस्क जरूर करें और जरूरत के हिसाब से उसमें बदलाव करें। यदि आप सही प्लानिंग के साथ चलेंगे तो परेशानी नहीं होगी और अपने लिए आसानी से अच्छा फंड जुटा पाएंगे। रिटायरमेंट के बाद आपको किसी का मुंह तकने की जरूरत नहीं होगी। अपने खर्च खुद उठाने में सक्षम होंगे।

पूरी तैयारी के साथ होना चाहिए रिटायरमेंट

रिटायरमेंट का मकसद सिर्फ नैकरी खरम होना नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति जीना है, जिसमें आर्थिक चिंता न हो। अगर आप अपने करियर को बनाने में जितनी मेहनत करते हैं, उतनी ही एनर्जी अपने वित्तीय भविष्य को बनाने में भी लगाएं। रिटायरमेंट प्लानिंग को आज शुरू करना आपके कल को बेहतर बना सकता है। इसलिए यह समझना जरूरी है कि रिटायरमेंट की रेस में जीतने के लिए शुरुआत अभी से करनी होगी। आखिरी वक्त में दौड़ने से मजिल नहीं मिलती, बल्कि वक्त पर उज्या गथा एक-एक कदम आपके आगे वाले कल को बेहतर बनाने में बड़ा योगदान कर सकता है।

रिटायरमेंट के लिए निवेश विकल्प

- पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) :** पीपीएफ एक लंबी अवधि का निवेश विकल्प है जो आयकर अधिनियम के तहत कर लाभ प्रदान करता है। एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम) : एनपीएस एक रिटायरमेंट बचत योजना है जो आपको अपने भविष्य के लिए एक फंड के रूप में मदद करती है। म्यूचुअल फंड : म्यूचुअल फंड एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो आपको विभिन्न प्रकार की सिखोरिटीज में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है।
- फिक्स्ड डिपॉजिट :** फिक्स्ड डिपॉजिट एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो आपको एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे जमा करने का अवसर प्रदान करता है।
- शेयर बाजार :** शेयर बाजार एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो आपको कंपनियों के शेयरों में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है। निवेश करने के लिए कुछ सुझाव
- जल्दी शुरू करें :** रिटायरमेंट के लिए निवेश करना जितनी जल्दी शुरू करेंगे, उतना ही अधिक समय आपके पैसे को बढ़ाने के लिए मिलेगा।
- नियमित निवेश करें :** नियमित निवेश करने से आपको अपने निवेश लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।
- विविधीकरण करें :** अपने निवेश को विभिन्न प्रकार की सिखोरिटीज में विभाजित करने से आपको जोखिम को कम करने में मदद मिल सकती है।
- अपने निवेश लक्ष्यों को परिभाषित करें :** अपने निवेश लक्ष्यों को परिभाषित करने से आपको अपने निवेश निर्णयों को निर्दिष्ट करने में मदद मिल सकती है।

खबर संक्षेप

कम नहीं हो रहे सूर्य देव के तेवर
बहादुरगढ़। शहर में शनिवार को अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहा, जबकि न्यूनतम तापमान 29 डिग्री सेल्सियस रहा। बढ़ते हुए पारे से लोग परेशान रहे। दोपहर के समय वाहनों से भरी रहने वाली सड़कें खाली नजर आईं। विदित है कि बीते एक हफ्ते से आसमान से आग बरस रही है। शनिवार को तेज धूप ने लोगों को उबाल कर रख दिया। देर शाम तक ऐसा ही मौसम बना रहा। धूप में निकलते समय लोग चेहरे को ढक कर निकल रहे हैं। बढ़ती गर्मी ने अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या बढ़ा दी है।

जिले की सभी आईटीआई में दाखिला प्रक्रिया शुरू
झज्जर। जिले के सभी राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में सत्र 2025-26 के लिए दाखिले की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। दाखिला के लिए आवेदन प्रक्रिया 6 जून से 20 जून तक चलेंगी। इस संबंध में डीसी स्वनिल रविन्दर पाटिल ने जिला झज्जर के युवाओं से आह्वान किया है कि वे दाखिला लेने से पूर्व अपनी रचना योग्यता के अनुसार कोर्स का सावधानीपूर्वक चयन करें ताकि उन्हें भविष्य में बेहतर रोजगार अवसर मिल सकें।

इस पवित्र स्थल पर महर्षि हर रोज स्नान करते थे दुर्वासा धाम में हुई महर्षि दुर्वासा की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा

कार्यक्रम में तपोभूमि जटोला धाम माजरा दुबलधन के महंत राजेंद्र दास ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की

हरिभूमि न्यूज झज्जर

शनिवार को गांव दुबलधन में पंडित और विद्वानों द्वारा हवन और मंत्र उच्चारणों के साथ महर्षि दुर्वासा ऋषि की मूर्ति स्थापना की गई। कार्यक्रम में तपोभूमि जटोला धाम माजरा दुबलधन के महंत राजेंद्र दास ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा कि बेरी क्षेत्र को देवताओं की तपोस्थली के नाम से जाना जाता है। क्योंकि यह बड़े-बड़े सिद्ध साधु संतों की तपोभूमि रही है। आज जिस तीर्थ स्थल पर महर्षि दुर्वासा ऋषि की मूर्ति स्थापित की गई है। इस पवित्र स्थल पर महर्षि हर रोज स्नान करते थे। इस दौरान कपूरी की पहाड़ी चरखी दादरी से



झज्जर। प्राण-प्रतिष्ठा से पूर्व महर्षि दुर्वासा की प्रतिमा की पूजा-अर्चना करते हुए महंत राजेंद्रदास, दुर्वासा धाम का पवित्र तालाब जहां की गई मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा।



झज्जर। प्राण-प्रतिष्ठा से पूर्व महर्षि दुर्वासा की प्रतिमा की पूजा-अर्चना करते हुए महंत राजेंद्रदास, दुर्वासा धाम का पवित्र तालाब जहां की गई मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा।

कबीरदास जयंती समारोह को लेकर किया मंथन

झज्जर। आगामी 11 जून को सिरसा में मनाई जाने वाली संत शिरोमणि कबीर दास महाराज की राज्य स्तरीय जयंती समारोह को लेकर डीएससी समाज की बैठक शनिवार को धानक धर्मशाला में आयोजित की गई। धानक समाज उत्थान समिति के आह्वान पर आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता समिति प्रधान मंगेराज नंदा ने की। बैठक के दौरान समाज के प्रमुखों द्वारा जयंती समारोह में अधिक से अधिक शामिल होने का आह्वान किया गया। इसके लिए कार्यक्रमों की ड्यूटियां भी लगाई गईं। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस बार संत कबीर जयंती में झज्जर जिले की उपस्थित बड़ी संख्या में दर्ज कराने का प्रयास किया जाएगा। इस मौके पर मनीष सुरलिया, अमित नागर, अंजित खन्ना, बलवान सराहा, विकास नागर, नैनपाल आर्य, कृष्ण खटक, सुरजमल निगनिया, अग्निषेक वाल्मीकि, डॉक्टर मोहन, राकेश उज्जैनवाल, विकास उज्जैनवाल सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

जाना जाता है। महर्षि दुर्वासा ऋषि सेवा समिति के प्रधान ढीला

पहलवान ने ग्रामवासियों, पूजा-अर्चना कराने वाले पंडित-पुरोहितों व बाहर से आए सभी अतिथियों का अभिनंदन किया।

गले मिलकर दी ईद की बधाई साइबर सेल टीम ने एक माह में ढूंड निकाले ढाई लाख कीमत के 18 गुम हुए मोबाइल

बहादुरगढ़ में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ईद-उल-फितर

हरिभूमि न्यूज बहादुरगढ़

शनिवार का दिन मुस्लिम समाज के लिए खास रहा। उन्होंने हर्षोल्लास के साथ ईद-उल-फितर पर्व मनाया। इसके लिए सुबह से ही शहर की मस्जिदों में मुस्लिम समाज के लोग एकत्र हुए और नमाज अदा कर देश में अमन और शांति की दुआ मांगी। दिनभर मुबारकबाद देने का सिलसिला जारी रहा। शहर में शनिवार को सुबह से ही मुस्लिम समाज के लोगों ने नए परिधान पहनकर नगर में स्थित विभिन्न

मस्जिदों का रुख किया। मस्जिदों के इमाम ने नमाज अदा कराई। अमन-शांति की दुआ के बाद मुस्लिमों ने एक-दूसरे को गले मिलकर ईद की बधाई दी। असलम खां ने ईद की नमाज अदा करते वक्त विश्व शांति, विकास व उत्थान के लिए दुआ की। मुस्लिम समाज के लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। अलीशेर खां ने कहा कि ईद बुराइयों का त्यागने का पर्व है। इस अवसर पर मुल्क व लोगों की सलामती के लिए विशेष दुआ मांगी गई और लोगों को हक व ईसाफ के रास्ते पर चलने की हिदायतें दी गईं। ईद को लेकर शहर में रौनक रही। मस्जिदों के निकट अस्थाई बाजार सजे हुए थे।

मालिकों को कार्यालय में बुलाकर मोबाइल सौंप दिए

हरिभूमि न्यूज झज्जर

एसीपी अनिरुद्ध चौहान ने 18 गुम हुए मोबाइल को उनके मालिकों को सौंप दिया। उन्होंने बताया कि साइबर सेल की टीम द्वारा बीते एक माह में आमजन के गुम हुए करीब ढाई लाख रुपये कीमत के सीईआईआर पोर्टल से ट्रैस 18

मोबाइलों के मालिकों को कार्यालय में बुलाकर मोबाइल सौंप गए। उन्होंने बताया कि सीईआईआर पोर्टल पर शिकायत रजिस्टर्ड करने के उपरांत मोबाइल का आईएमईआई ब्लॉक हो जाता है और मोबाइल ट्रेस होने उपरांत शिकायतकर्ता को सूचना दे दी जाती है। उन्होंने कहा कि जिला साइबर टीम लगातार गुमशुदा मोबाइल की माॉनिटरिंग करती है इसी के परिणाम स्वरूप ही खोए हुए मोबाइल पुलिस टीम द्वारा बरामद किए गए हैं।



झज्जर। गुम हुए मोबाइल को मालिकों सौंपते हुए एसीपी अनिरुद्ध चौहान।

मोबाइल फोन को ढूंड कर सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने बताया कि

संस्कारम युनिवर्सिटी में संस्कारम शिक्षा गौरव समारोह आज

झज्जर। रविवार को संस्कारम विश्वविद्यालय द्वारा संस्कारम शिक्षा गौरव सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। समारोह के दौरान बारहवीं कक्षा की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के चान्सलर डॉक्टर महिपाल ने बताया कि यह आयोजन सुबह दस बजे से बीएसएम स्कूल बहादुरगढ़, सनातन धर्मशाला सोनीपत, यादव धर्मशाला रेवाड़ी व स्काईलार्क टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स पानीपत में आयोजित किया जाएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि यह समारोह उन विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के लिए आयोजित किया जा रहा है। जिन्होंने एचबीएसई, आईसीएसई, एवं सीबीएसई बोर्ड परीक्षाओं में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक अर्जित किए हैं। संस्कारम विश्वविद्यालय में वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुसार सभी प्रमुख शैक्षणिक संकाय संचालित हैं, जिनमें इंजीनियरिंग एवं टेकनोलॉजी, प्रबंधन एवं वाणिज्य, विधि एवं विधिक अध्ययन, स्वास्थ्य एवं संबद्ध विज्ञान, कृषि, पशु चिकित्सा विज्ञान, पत्रकारिता एवं जनसंचार, मानविकी, हॉस्पिटैलिटी, कौशल विकास इत्यादि प्रमुख हैं। विश्वविद्यालय आधुनिक प्रयोगशालाओं, अनुभव फैकल्टी, तकनीकी संसाधनों एवं अनुशासित वातावरण के साथ विद्यार्थियों को एक सर्वांगीण विकास का मंच प्रदान कर रहा है।

विद्यार्थियों ने लिया विभिन्न खेल गतिविधियों का आनंद

झज्जर। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ढाकला में आयोजित भारतीय भाषा ग्रीष्मकालीन कैम्प के छठे दिन विद्यार्थियों ने पंजाबी के तीज त्योहारों की जानकारी लेने के साथ-साथ विभिन्न खेल गतिविधियों का आनंद उठाया। विद्यालय प्राचार्य वेद प्रकाश ने बताया कि विभाग द्वारा दिए गए शोड्यूल् के अनुसार गणित प्रवक्ता आनंद, राजनीतिक विज्ञान प्रवक्ता यशवंती देवी तथा अमित डीपी ने विद्यार्थियों को पंजाब राज्य की संस्कृति से परिचित कराते हुए वहां के तीज त्योहारों की जानकारी दी। इस दौरान जहां स्वतंत्रता संग्राम में शामिल पंजाब के स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी दी गई वहीं महान विभूतियों जैसे गुरु नानक देव, गुरु तेग बहादुर, बंदा सिंह बहादुर, गुरु गोविंद सिंह आदि के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया। गणित अध्यापक सुनील कुमार ने पंजाब प्रांत की फसलों, नदियों, पहाड़-पर्वत आदि की भौगोलिक जानकारी डिजिटल बोर्ड पर वीडियो तथा तस्वीरें दिखाकर दी। विद्यार्थियों में खेल की प्रतियोगिताएं कराई जिसका विद्यार्थियों ने आनंद खूब आनंद लिया।



झज्जर। कैम्प के दौरान खेल गतिविधियों का आनंद लेते हुए विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

ब्रेन ट्यूमर के प्रति जागरूक किया

बहादुरगढ़। आधुनिकता के इस दौर में ब्रेन ट्यूमर के मामले भी तेजी से बढ़ रहे हैं। इस गंभीर बीमारी के प्रति जागरूक करने के लिए हर वर्ष आठ जून को विश्व ब्रेन ट्यूमर डे मनाया जाता है। ब्रेन ट्यूमर डे के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में विशेषज्ञ चिकित्सकों ने इसके खतरों और इलाज के बारे में जानकारी दी। न्यूरोसर्जरी और साइबरनाइफ, आर्टिफिसिअल इंटेलिजेंस के निदेशक डॉ. आदित्य गुप्ता ने बताया कि बार-बार सिरदर्द, उल्टी, दौरे, नजर में बदलाव, बोलने या समझने में कठिनाई, संतुलन की समस्या या व्यवहार में बदलाव को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय रहते एमआरआई जैसे टेस्ट से ट्यूमर की पहचान हो सकती है और सही इलाज की दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है। आज साइबर नाइफ जैसी तकनीकों ने इलाज को सुरक्षित, दर्दरहित और अल्पतः सटीक बना दिया है। एक बिना चीरा और बिना भर्ती के होने वाली रेडियोसर्जरी है, जो उन मरीजों के लिए बेहद प्रभावी है जो पारंपरिक सर्जरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं। डॉ. गुप्ता ने समाज से अपील की कि लोगों को लक्षणों के प्रति सजग रहने की जरूरत है और समय पर इलाज की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

शिविर में 35 युवाओं ने किया रक्तदान



झज्जर। रक्तदाताओं को प्रशस्ति-पत्र देकर उनका उत्साह बढ़ाते संस्था सदस्य।

हरिभूमि न्यूज झज्जर
इंटेण्डेड विजन फाउंडेशन व सेवा ट्रस्ट यूके इंडिया द्वारा विश्व ब्रेन ट्यूमर दिवस के उपलक्ष्य में जिले के गांव छप्पार में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कैंसर पीड़ितों के लिए आयोजित इस रक्तदान शिविर में 35 रक्तदाताओं ने अपना रक्त दान किया। शिविर में रक्त एकत्रित करने का कार्य राष्ट्रीय कैंसर संस्थान बाढ़सा की अध्यक्षता संस्था के सदस्य आशु तथा दीपक ने किया। उन्होंने सभी रक्तदाताओं को बैज लगाए तथा प्रशस्ति-पत्र देकर उनका हौसला बढ़ाया। आशु ने कहा कि समय रहते सावधानी और स्वास्थ्य की देखभाल से ब्रेन ट्यूमर के खतरों को कम किया जा सकता है। योग तथा कुछ विशेष आसन मस्तिसृक को शांत करने, तंत्रिका तंत्र को मजबूत करने और शरीर में रक्त संचार को बेहतर करने में मदद करते हैं, जिससे ब्रेन ट्यूमर जैसी बीमारियों के खतरों को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। इस मौके पर अश्वनी, डॉक्टर सोमबीर, पूर्व सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

पार्टी के प्रचार के लिए कार्यकर्ताओं को सौंपी जिम्मेदारियां
झज्जर। शनिवार को इनेलो पार्टी की नई कार्यकारिणी की बैठक जिलाध्यक्ष सतपाल पहलवान की अध्यक्षता में स्थानीय पार्टी कार्यालय में हुई। जिलाध्यक्ष सतपाल पहलवान ने सभी हलका प्रधाओं व कार्यकर्ताओं को पार्टी को लेकर गांव गांव जाकर प्रचार करने के लिए आह्वान किया और लोगों को पार्टी से जोड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि इनेलो पार्टी का हर एक कार्यकर्ता गांव गांव जाकर पूर्व उप प्रधान मंत्री चौधरी देवीलाल व पूर्व मुख्य मंत्री आमप्रकाश चौटाला की नीतियों को लोगों को बताएंगे और उन्हें पार्टी के साथ जोड़ने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि अब जनता के पास एकमात्र विकल्प इनेलो पार्टी ही शेष रह गई है। माजपा या फिर कांग्रेस अब लोगों के दिलों से उतर चुकी है। कांग्रेस ही या फिर माजपा दोनों ने जनता के साथ पड़चर के साथ धोखा करने का काम किया है। लेकिन अब जनता जाग चुकी है और इनके झूठे और चुनवाी वायदों को भी मांप चुकी है। उन्होंने कहा कि आने वाला समय इनेलो पार्टी और इस प्रदेश की जनता का होगा।



नशे के प्रति गामीणों को जागरूक किया

बहादुरगढ़। साइबर क्राइम और नशे के प्रति लोगों जागरूक करने के लिए पुलिस की ओर से गांव-गांव जाकर कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को बालौर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कार्यक्रम किया गया। सदर थाना प्रमारी दिलबाग सिंह ने कहा कि नशा समाज में गंभीर समस्या है। इसकी वजह से अपराध बढ़ रहा है। नशे के कारण शारीरिक, मानसिक व आर्थिक हानि होती है। एक व्यक्ति की नशे की लत उसके पूरे परिवार को बर्बाद कर देती है। इसके अलावा आसपास रहने वाले अन्य लोगों पर भी बुरा असर पड़ता है। इसलिए नशे से दूर रहें। यदि आपके आसपास कोई नशीला सामान बेचना है तो उसकी सूचना पुलिस को दें। उन्होंने कहा कि आजकल साइबर क्राइम के मामले भी बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी भी अज्ञान को अपने खते से संबंधित जानकारी न दें। हर किसी परामर्श मैकेज व पोस्ट पर भरोसा न करें। इस दौरान इंस्पेक्टर सतीश कुमार ने लोगों को यातायात नियमों की जानकारी देकर जागरूक किया।



ग्रीष्मकालीन कैम्प में विद्यार्थियों ने सीखी पंजाबी भाषा



झज्जर। एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में आयोजित सात दिवसीय भाषा ग्रीष्मकालीन कैम्प शनिवार को संपन्न हो गया। सहगामी कियाओं की प्रमुख कमलेश दिल्ली ने बताया कि विद्यालय प्राचार्य सतबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस शिविर में विद्यार्थियों ने पंजाबी भाषा के अंतर्गत वर्णमाला, गिनती, हस्ताक्षर, वचुअल सिटी टूर, आपसी लतालाप, कला, नृत्य, पेंटिंग, सादा भोजन, साहित्य, वहां का रहन-सहन, उनका इतिहास, नदियों, पर्वत व ऐतिहासिक पर्यटक स्थलों के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल की। विद्यार्थियों ने इन सात दिनों में जो कुछ सीखा उसे अपने माता-पिता के सामने बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया। इस दौरान विद्यार्थियों के बीच पंजाबी भाषा विवज का आयोजन भी किया गया। एचडी वरिष्ठ सचिव हेमंत गुलिया ने विद्यार्थियों को बताया कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत सभी विद्यालयों में भारतीय भाषा स्मर कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। एचडी वरिष्ठ डायरेक्टर रमेश गुलिया और सचिव विशाल नेहरा ने भी पंजाबी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों को उत्साहकेंद्रित करते हुए भाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।



बॉक्सिंग में जिले के खिलाड़ियों का प्रदर्शन रहा शानदार

झज्जर। हाल ही में रोहताक में आयोजित हरियाणा बॉक्सिंग चैंपियनशिप में जिले के खिलाड़ियों का प्रदर्शन रहा। बॉक्सिंग कोच हितेश देवावाल ने बताया कि 4 से 7 जून तक आयोजित इस प्रतियोगिता में क्विंटेन ने 46 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक, विशाल दलाल ने 63 किलोग्राम वर्ग में सिल्वर मेडल तथा खानक दलाल ने 80 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर प्रतियोगिता के श्रेष्ठ मुक्केबाजों में अपना स्थान बनाया। इनके अलावा आकांक्षी दलाल और श्रद्धा ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक जीता। उन्होंने विजेता खिलाड़ियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अवैध हथियार व नशीले पदार्थ मामलों में 46 आरोपी काबू

झज्जर। पुलिस की अलग अलग टीमों द्वारा बीते एक माह में अवैध हथियार व नशीले पदार्थों की तस्वीरों करने के विभिन्न मामलों में 46 कार्टवाई करते हुए 46 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। प्रवक्ता ने बताया कि जिला पुलिस आयुक्त डॉ. राजश्री सिंह के निदेशानुसार पुलिस की अलग-अलग टीमों ने अलग-अलग स्थानों पर कार्टवाई करते हुए नशीले पदार्थ के मामले में आठ आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। जिनके कब्जे से चरस, हेरोइन व गांजा जैसे नशीले पदार्थ बरामद हुए। अवैध हथियार रखने वालों पर कार्टवाई करते हुए पुलिस की अलग-अलग टीमों द्वारा विभिन्न स्थानों से करीब 23 अपराधिक मुकदमें दर्ज करते हुए 38 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

जल ही जीवन है इसे बचाओ

मैं, श्रीमति कृष्णा पत्नी स्व. पालेयाम निवासी गांव रोहद, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करती हूं कि मेरा पुत्र दीपक व पुत्रवधु सीमा मेरे कहने-सुनने से बाहर हैं। इसलिए मैं इनको अपनी चाल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करती हूं। इनसे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरे व मेरे परिवार को कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

कार्यालय नगर परिषद बहादुरगढ़ नोटिस आम जनता सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती सुदेश अरोड़ा (पत्नी), संजय कुमार (पुत्र), राजीव अरोड़ा (पुत्र) व सोनिया खेम (पुत्री) संत श्री खरेती लाल निवासी मराव मौल्ला, निबर धेन बाजार, बहादुरगढ़ द्वारा Online NDC Portal पर Property ID No. 3B5DBGW3 बर्द नं. 17/1020 कॉलोनी सराय मोहल्ला को कि नगर परिषद बहादुरगढ़ में नाम का कालम रिजर्व है में नाम दर्ज व वर्ग गज 86.67 से 103.75 वर्ग गज करवाने हेतु Online Application No. 0185937981 द्वारा अर्पण किया है। अतः आम व खास को इस नोटिस के माध्यम से सूचित किया जाता है कि उक्त वर्ग गज नम्बर 3B5DBGW3 बर्द नं. 17/1020 कॉलोनी सराय मोहल्ला पर यदि कोई अन्य हकदार है या उन सम्पत्ति पर किसी को कोई आपत्ति है तो वह सूचीबद्ध सूचित इस नोटिस के प्रकाशन के 30 दिन के अंदर-अंदर नगर परिषद बहादुरगढ़ कार्यालय में आकर अपना दावा पेश करें। अन्यथा इस नोटिस का समय समाप्त होने पर वह सम्पत्ति 3B5DBGW3 वर्ग गज गार्ड ऑफिसीयल प्लॉट अरोड़ा (पत्नी), संजय कुमार (पुत्र), रजनीव अरोड़ा (पुत्र) व सोनिया खेम (पुत्री) लेते श्री खरेती लाल के नाम से नगर परिषद बहादुरगढ़ के रिजर्व में दर्ज कर दी जाएगी। इसमें नगर परिषद बहादुरगढ़ को कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।
हस्ता/-कार्यकारी अधिकारी, नगर परिषद बहादुरगढ़।

श्रद्धालुओं ने व्रत रख कर भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना की मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है...

भजन गायकों ने अपनी मधुर वाणी से खाटू श्याम के भजनों से गुणगान किया

हरिभूमि न्यूज झज्जर

हरिपुरा मोहल्ला स्थित श्रीराम मंदिर में शनिवार को भजन संस्था का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने व्रत रख कर भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करते हुए परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम में राधेश्याम भाटिया, बिट्टू चुध, संजय गेरा, विनोद मदान, चिंटू सक्सेना, धीरज शर्मा

सहित भजन गायकों ने अपनी मधुर वाणी से खाटू श्याम के भजनों से गुणगान किया। अमित गोयल, युगल शर्मा, ओम प्रकाश सैनी ने मेरे लाडले गणेश प्रवेशे च्यारे. भजन से गणेश वंदना की। जगदीश कटारिया ने करू वंदना पुष्पारी मां शारदे, दरबार मेरे श्याम का सबको बुला रहा, किस्मत में जिनके श्याम हैं... सतीश कटारिया ने किस्मत वालों को मिलता है श्याम मेरा दरबार... गुलशन शर्मा ने मेरा आपकी कृपा सब काम हो रहा है... रोहित सलूंकी व अमित गोयल ने श्यामा तेरी चरणों की गर धूल जो मिल जाए, सच कहता हूँ मेरी



झज्जर। भजन संस्था के दौरान भजनों की प्रस्तुति देते हुए गायक कलाकार। फोटो: हरिभूमि

तकदीर बदल जाए... धीरज शर्मा व संजय मक्कड़ ने देना हो तो दीजिए जन्म-जन्म का साथ, मेरे सिर पे रख दो अपने ये दोनों हाथ... राधेश्याम भाटिया ने सारे तीर्थ धाम आपके चरणों में... सुनील शर्मा मेरा ने कीर्तन की है रात बाबा आज था नै आनो है... विनोद मदान ने मेरे बाबा मुझे खाटू बुला लीजिए. भजन प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया।

खबर संक्षेप

रक्तदान एवं चिकित्सा परामर्श शिविर आज

झज्जर। क्षेत्र के गांव सासरोली में आम जन विकास सेवा समिति द्वारा रक्तदान एवं चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया जाएगा। समिति प्रधान प्रदीप शर्मा ने बताया कि गांव के सासरोली चौक पर सुबह नौ बजे से सांय पांच तक चलने वाले इस शिविर में सजीवन अस्पताल की चिकित्सकीय टीम सेवाएं देगी। इस दौरान लोगों की सामान्य जांच के अलावा दंत एवं नेत्र जांच भी की जाएगी।

चोरी के मामले में आरोपी गिरफ्तार

बहादुरगढ़। बादली थाना पुलिस ने चोरी के एक मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी से चोरीशुदा मोबाइल भी बरामद कर लिया गया है। बादली थाना प्रभारी सुरेश कुमार के अनुसार, बुपनिया के निवासी रामअवतार ने शिकायत दी थी कि 26 अप्रैल को किसी ने अलमारी का ताला तोड़कर आभूषण व मोबाइल चोरी कर लिया। इस संबंध में केस दर्ज कर जांच शुरू की गई। मामले में अब एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सुरेंद्र निवासी बुपनिया के रूप में हुई है। आरोपी से चोरी किया गया मोबाइल बरामद हुआ है। आरोपी को जेल भेज दिया गया है।

बाइक चोरी मामले में आरोपी गिरफ्तार

झज्जर। पुलिस की एक टीम द्वारा मोटरसाइकिल चोरी करने मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। शहर थाना प्रभारी सरिता ने बताया कि मोहित निवासी जैतपुर की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान जितेंद्र निवासी बाबरा जिला झज्जर के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

बिरोहड़ गांव में लीगल सर्विस कैंप 12 जून को

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से आगामी 12 जून को गांव बिरोहड़ में एक दिवसीय लीगल सर्विस कैंप का आयोजन किया जाएगा। प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम विशाल ने बताया कि कैंप में नागरिकों की विभिन्न प्रकार की मामलों को सुना जाएगा। उन्होंने आमजन से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस शिविर में पहुंचकर कैंप का लाभ उठाएं। उन्होंने बताया कि कैंप में परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, वोटर कार्ड, राशन कार्ड, बिजली, राजस्व, पानी, पेंशन आदि से संबंधित मामलों सुने जाएंगे। कैंप के दौरान सिविल सर्जन डॉक्टर जयमाला एवं जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर पवन देशवाल के सहयोग से एक हेल्थ चेकअप कैंप का भी आयोजन किया जाएगा।

मिशन एडमिशन: स्नातक कक्षाओं में आवेदन की अंतिम तिथि कल

कॉलेजों में एडमिशन के लिए अनिवार्य है रजिस्ट्रेशन



- नेहरू कॉलेज में अब तक 1002 आवेदन
- दस्तावेजों की ऑनलाइन वेरिफिकेशन 15 जून तक होगी

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

विभिन्न कॉलेजों में बीए, बीएससी, बीकॉम, बीबीए और बीसीए आदि स्नातक कक्षाओं के दाखिलों के लिए नौ जून तक उच्चतर शिक्षा विभाग के एडमिशन पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर अमित भारद्वाज ने बताया कि यदि विद्यार्थी अपने ऑनलाइन फार्म में कोई संशोधन करना चाहें तो दस जून तक कर सकते हैं। दस्तावेजों की ऑनलाइन वेरिफिकेशन 15 जून तक होगी। पहली फाइनल मरिट लिस्ट 19 जून को आएगी।

वैकल्पिक विषय चयन में रूचि को दे प्रथमिकता: वैकल्पिक विषय का चयन करते समय अपनी रूचियों का मूल्यांकन करें। जिस विषय में

आपको स्वाभाविक आनंद आता है, उसे पढ़ना बड़ नहीं लगेगा। उदाहरण के लिए, यदि आपको समसामयिक घटनाएं जानने में रुचि है या इन पर चर्चा करना पसंद है, तो पत्रकारिता का विषय उपयुक्त हो सकता है।

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में यूजी कक्षाओं की 1200 सीटों के लिए शनिवार शाम तक 1002 आवेदन किए गए हैं। इनमें से बीए की 480 सीटों के लिए 448, बीबीए की 80 सीटों के लिए 172, बीबीए की 80 सीटों के लिए 85, बीकॉम की 140 सीटों के लिए 74, बीएससी फिजिकल साइंस की 300 सीटों के लिए 97, बीएससी लाइफ साइंस की 80 सीटों के लिए 86 और बीएससी गणित की 40 सीटों के लिए 40 आवेदन किए गए हैं।



हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

बाहरवों में उतीर्ण हुए छात्र-छात्राएं उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने के लिए सही विषय व कॉलेज की तलाश में हैं। स्नातक कक्षाओं के लिए कॉलेजों में एडमिशन लेने के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग के पोर्टल पर पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। रजिस्ट्रेशन के लिए 9 जून अंतिम तिथि है।

वर्तमान डिजिटल दौर में सीए, बैंक रोजगार, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, डेटा साइंस, मशीन

लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, यूपीएससी, एसएससी व साइबर सिक्योरिटी जैसे फील्ड में युवा भविष्य तराशा चाह रहे हैं। इसके लिए छात्र-छात्राएं बीए, बीकॉम, बीएससी (फिजिकल साइंस) व बीसीए जैसे कोर्स करके तकनीकी क्षेत्र में शानदार भविष्य बना सकते हैं।

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय बहादुरगढ़ की प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने बताया कि छात्राएं एनईपी 2020 के अनुसार महाविद्यालय में दाखिला पा सकती हैं। छात्राएं

महाविद्यालय में आर्ट्स, फिजिकल साइंस, कॉमर्स व कम्प्यूटर साइंस में स्नातक की डिग्री हासिल कर सकती हैं। स्नातक करने के बाद छात्राएं गणित, भूगोल, अंग्रेजी, भौतिकी व रसायन विज्ञान आदि विषयों में स्नातकोत्तर की डिग्री भी प्राप्त कर सकती हैं। एडमिशन की नोटल आफिसर डॉ. नेहा नैन के अनुसार विद्यार्थी घर बैठे स्वयं भी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। हालांकि छात्राएं काउंसलिंग के साथ ही नि:शुल्क रजिस्ट्रेशन के लिए कॉलेज आ सकती हैं।

लड़कियों व महिलाओं को आत्मरक्षा के लिए लेना चाहिए प्रशिक्षण: राठौर

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

विश्व हिंदू परिषद की इकाई दुर्गा वाहिनी की राष्ट्रीय सह-संयोजिका पंकी पंवार तथा दिल्ली प्रांत की संयोजिका अरुणा राठौर के अनुसार पूरे देश में लड़कियों व महिलाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण जरूर लेना चाहिए। ताकि हमारी बेटियां व महिलाएं किसी भी स्थिति से निपटने में सक्षम हों। विहिप के मातृशक्ति विभाग की जिला संयोजिका डॉ. अंजू अग्रवाल ने दोनों का अपने निवास पर स्वागत व सम्मान किया। पंकी पंवार ने बताया कि



बहादुरगढ़। पंकी पंवार व अरुणा राठौर के साथ डॉ. अंजू अग्रवाल व सुशील अग्रवाल। फोटो: हरिभूमि

दुर्गा वाहिनी द्वारा 15 से 35 वर्ष आयु की लड़कियों व महिलाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ धर्म का कार्य करने, भारत की गौरवशाली प्राचीन हिंदू संस्कृति के बारे में अवगत कराया जा रहा है। अरुणा राठौर ने कहा कि

सरकार भी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही है। वहीं दुर्गा वाहिनी द्वारा बेटियों व महिलाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देकर उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से मजबूत करने का कार्य किया जा रहा है।

तनाव से मुक्ति के लिए नियमित योग जरूरी

बहादुरगढ़। भाजपा के जिला उपाध्यक्ष डॉ. पंकज जैन के अनुसार नियमित रूप से योग करके हम तनाव से मुक्ति और बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं। मोदी सरकार द्वारा निरंतर योग को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का पूरा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है।

इस बार भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां उत्साह के साथ की जा रही हैं। डॉ. पंकज जैन ने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जीवन शैली में तनाव से मुक्ति का रामबाण उपाय योग है।



21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का पूरा श्रेय प्रधानमंत्री को

नप प्रधान ने डीएमसी से पेमेंट अप्रुवल कमेटी की मीटिंग बुलाने की मांग की

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

हड़ताल पर बैठे सफाई कर्मचारियों का वेतन दिलाने के लिए नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी ने डीएमसी को पत्र लिखकर पेमेंट अप्रुवल कमेटी की मीटिंग बुलाने की मांग की है। ताकि संबंधित एजेंसी के सफाई कार्य के बिल का भुगतान हो और हड़ताल पर बैठे सफाई कर्मचारियों को वेतन मिल सके। चेयरपर्सन सरोज राठी ने डीएमसी को लिखे पत्र में बताया कि नगर परिषद बहादुरगढ़ ने डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन और स्वीपिंग का ठेका दे रखा है। इनमें



कार्यरत सफाई कर्मचारी वेतन के लिए 3 जून से हड़ताल पर बैठे हुए हैं। संबंधित एजेंसी के बिल भुगतान के लिए परिषद स्तर पर लंबित है। नप द्वारा 6 मई व 4 जून को पत्र लिखकर डीएमसी की अध्यक्षता वाली पेमेंट अप्रुवल कमेटी की मीटिंग बुलाने का अनुरोध किया था। लेकिन अब तक मीटिंग नहीं बुलाई गई। जिस कारण एजेंसी का भुगतान नहीं हुआ और वेतन के लिए कर्मचारियों ने हड़ताल कर रखी है। इस कारण बहादुरगढ़ शहर की सफाई व्यवस्था चरमरा गई है। महामारी फैलने का अंदेश है।

ट्रेनों का विस्तार कटरा से श्रीनगर करने की मांग

बहादुरगढ़। दिल्ली-रोहताक दैनिक रेल यात्री समिति के प्रवक्ता सतपाल हाडा ने रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर जन्मू तक जाने वाली रेलगाड़ियों का विस्तार श्रीनगर स्टेशन तक करने का अनुरोध किया है। गाड़ी N22941 इंदौर-उधमपुर एक्सप्रेस का ठहराव बहादुरगढ़ स्टेशन पर करने की मांग की है। इसी के साथ बहादुरगढ़ के रास्ते कटरा स्टेशन तक जाने वाली रेलगाड़ियों का गंतव्य बढ़ाकर श्रीनगर तक करने का अनुरोध किया है। दिल्ली रोहताक दैनिक रेल यात्री समिति ने ट्रेन 16031 अंडमान एक्सप्रेस, 16317 कन्याकुमारी-श्री माता वैष्णो देवी

दिल्ली-रोहताक दैनिक रेल यात्री समिति के प्रवक्ता ने रेलमंत्री को लिखा पत्र

एक्सप्रेस, 11449 जबलपुर-श्री माता वैष्णो देवी एक्सप्रेस, 16787 त्रिनवेली-श्री माता वैष्णो देवी एक्सप्रेस आदि का विस्तार श्रीनगर स्टेशन तक करने की मांग की है। नई दिल्ली-हिसार के बीच नई एक्सप्रेस गाड़ी के संचालन और नई दिल्ली से श्रीनगर के लिए बंदे भारत एक्सप्रेस का ठहराव बहादुरगढ़ स्टेशन पर देते हुए संचालन करने का अनुरोध किया है। शनिवार को कोई भी ट्रेन वाया बहादुरगढ़-रोहताक कटरा नहीं जाती।

स्वास्थ्य और शिक्षा समाज की रीढ़ : प्रेम गर्ग

वैश्य बीएड कॉलेज में डिस्पेंसरी का उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

नूना माजरा स्थित श्री सत्यनारायण अग्रवाल हॉस्पिटल के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट प्रेम गर्ग द्वारा शनिवार को वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ में डिस्पेंसरी का उद्घाटन किया गया। इससे छात्राओं के साथ ही आसपास की महिलाओं व आमजन को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं सुलभता से



मिल सकेंगी। प्रेम गर्ग ने कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा समाज की रीढ़ होते हैं। इस डिस्पेंसरी के माध्यम से छात्राओं के स्वास्थ्य सेवा मिलेंगी। प्रधान

बहादुरगढ़। वैश्य बीएड कॉलेज में डिस्पेंसरी का उद्घाटन करते पदाधिकारी।

सत्यनारायण अग्रवाल ने बताया कि यहां नियमित स्वास्थ्य जांच, प्राथमिक उपचार, स्वास्थ्य परामर्श तथा आवश्यक दवाओं की सुविधा उपलब्ध होगी। प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि शिक्षा के साथ स्वास्थ्य की जागरूकता भी अत्यंत आवश्यक है। इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन हॉस्पिटल के महामंत्री संजय, डॉ. शोभा, डॉ. कौशल, राजकुमार अग्रवाल, कर्मवीर, राजेश तंवर, जयभगवान लोहिया, मनोज गुप्ता, पवन गोयल, सुरेश अग्रवाल, प्रेमचंद बंसल, प्रदीप गुप्ता, विवेक आदि मौजूद रहे।

मस्ती के बीच हॉलिडे होमवर्क को पूरा करने में जुटे विद्यार्थी

ग्रीष्मावकाश में नई चीजों को सीखने के लिए बच्चों का मनोबल बढ़ाने की सलाह

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

गर्मी से बचने के साथ ही ग्रीष्मावकाश बच्चों के लिए मस्ती करने और नई चीजों को सीखने का एक बेहतरीन मौका होता है। हालांकि यह छुट्टियां मस्ती के मौके लाने के साथ हॉलिडे होमवर्क भी लेकर आती है। ज्यादातर बच्चे इन दिनों अपना हॉलिडे होमवर्क करने और प्रोजेक्ट्स आदि पूरे करने में जुटे हैं। जी हां, गर्मी का मौसम बच्चों के लिए छुट्टियों भी लेकर आता है। ये छुट्टियां बच्चों के लिए मस्ती करने और नई चीजों को सीखने का बेहतरीन समय देती हैं। लगभग एक महीने से अधिक की छुट्टियों में बच्चों की दिनचर्या पूरी तरह बदल जाती है। गर्मी की छुट्टियां सिर्फ मस्ती के साथ हॉलिडे होमवर्क भी लेकर आती है। इस दौरान अधिकांश अभिभावकों की शिकायत रहती है कि बच्चे होमवर्क करने में कतराते हैं और ऐसे ही छुट्टियां खत्म हो जाती हैं। हर बात रहे दिन के साथ छुट्टियां खत्म हो रही हैं। ऐसे में



अधिकांश बच्चे होमवर्क निपटाने में जुटे हैं। जीडी गौयनका स्कूल की निदेशिका शैलजा जून के अनुसार इस टाइम का सही से इस्तेमाल करते हुए बच्चे बहुत कुछ नया और इंटरस्टिंग सीख सकते हैं। उनकी सलाह है कि बच्चों के होमवर्क और टास्क को देखते हुए परेंट्स टाइम टेबल तैयार कर लें। कठिल काम जल्दी खत्म करने की कोशिश करें। आर्ट एंड क्रॉफ्ट की टीचर अर्चना पंवार ने बताया कि अगर बच्चा

हॉलिडे होमवर्क करने में दिलचस्पी नहीं दिखाए तो चार्ट पेपर और ड्राइंग की मदद से टास्क समझाने की कोशिश करें। लगातार एक जगह बैठकर फोकस प्रभावित होता है। होमवर्क करते वक्त बच्चों को बीच में मस्ती करने के लिए गैप जरूर दें। विज्ञान स्कूल की प्रिंसिपल रुपाक्षी नारंग ने बताया कि बच्चे की पढ़ाई पर फोकस करने के साथ ही नई चीजों को सीखने के लिए उनका मनोबल बढ़ाएं।

नेहरू महाविद्यालय में रखे बर्ड फीडर

झज्जर। सर्वभद्र ग्रुप सदस्यों द्वारा पक्षियों को गर्मी से बचाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में पन्द्रह से बीस बर्ड फीडर लगाए गए। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों व विद्यार्थियों से अपील की कि वे अपने घरों की छतों या आस-पास के स्थानों पर पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी अवश्य रखें। उन्होंने कहा कि ये जीव हमारे



पर्यावरण का अभिन्न अंग हैं। गर्मी के इस मौसम में उन्हें दाना-पानी की विशेष आवश्यकता होती है। थोड़ी सी मेहनत और संवेदनशीलता से हम इन नन्हें प्राणियों को जिंदगी बचा सकते हैं।

हरिभूमि आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सवर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

बहादुरगढ़ :- सुरजमल वाली गली, गणपति ट्रेल्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन :- 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
 मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
 राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 से.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	₹. 2500/- ₹. 3000/-

+5% GST Extra

नोट :- विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए फार्ड रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर :- हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन :- 8295876400
बहादुरगढ़ :- सुरजमल वाली गली, रोहताक रोड, गणपति ट्रेल्स के ऊपर, 8295852900

Vaish Arya Kanya Mahavidyalaya
 Line Par, Bahadurgarh
 email: vakm_principal@yahoo.com

Applications are invited from female candidates on Contract basis of Asstt. Professor (under Self Finance Scheme) for the following Posts:-

Sr.	Subject	UG	PG	Sr.	Subject	UG	PG
1.	Physics	02	04	2.	Mathematics	03	03
3.	Chemistry	02	04	4.	Computer Science	05	00
5.	Psychology	01	00	6.	Geography	02	03
7.	Political Science	01	02	8.	History	00	02
9.	Home-Science	01	00	10.	English	00	02
11.	Commerce	02	03	12.	Physical Education	01	00
13.	Environmental Science / Studies					01	00
01.	Clerk Male (having Proficiency in operating Computers)						02
02.	Accountant (Male)						01

Lab Attendant

Chemistry Lab (F).....	01	Physics Lab (F).....	01
Computer Lab (F).....	02	Library Attendant (F)....	01
Male Peon.....	01	Gardner (Male).....	01

Qualifications:- As Per MDU Rohtak, DGHE & UGC Norms.
 Salary:- Negotiable.
 Submit Resume to the President within 15 Days.
 Reception Contact No.:- 01276-260479 & 9350150669.
 (09:00 AM to 4:00 PM)

President.



समय तेजी से बदल रहा है। हर रोज तकनीक नए अवतार में सामने आ रही है। जाहिर है, ऐसे में सर्वाइव करने और ग़ो करने के लिए खुद को लगातार अपडेट करना जरूरी है। अच्छी बात है कि इस बात की महत्ता को समझते हुए आज के युवा अपनी स्किल्स डेवलपमेंट के लिए लगातार प्रयासरत हैं।

युवा नई स्किल्स सीखकर लगातार हो रहे अपडेट

ही नई परिस्थितियों के लिए खुद को तैयार रखना है। बदलती स्थितियों के साथ आसानी से ढलने की क्षमता जुटाना है। बदलाव के लिए लचीला रख रखना है। तकनीकी दुनिया में एआई से लेकर प्रोफेशनल वर्ल्ड में लोगों से जुड़ाव की राह चुनने तक, पेशेवर दुनिया में नित नया सीखते रहने की प्रवृत्ति आज के समय की जरूरत है। आज टेक्नोलॉजी, इंटरनेट, सर्विस सेक्टर हर फ्रंट पर बदलाव आ रहा है। काम-काजी दुनिया की बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप ढलना जरूरी है। स्किल्स और माइंडसेट के मोर्चे पर स्वयं को संवारते रहने से ही अपडेट रह जा सकता है। सुखद है कि युवा अपनी स्किल को निखारने को प्राथमिकता भी दे रहे हैं।

निखारने से जांब में सुरक्षा मिलती है। किसी क्षेत्र विशेष में पहचान बनाने का अवसर मिलता है। मौजूदा नौकरी में तो आगे बढ़ने के अवसर मिलते ही हैं, करियर के नए दरवाजे भी खुलते हैं। मानसिक रूप से यह स्थिति तनाव से भी दूर रखती है, क्योंकि आने वाले समय के लिए खुद को तैयार करने के प्रयास हर तरह की असुरक्षा से दूर रखते हैं। नई स्किल्स सीखने से हर इंसान को अपने आप के बारे में अच्छी और सकारात्मक अनुभूति होती है। अपनी क्षमता के प्रति बने विश्वास से मन अधिक सशक्त महसूस करता है। काम-काजी दुनिया में इस मन-स्थिति के साथ चुनौतियों का सामना करना और आसान हो जाता है। नए स्किल्स सीखने से नए लक्ष्य बनाने और पाने की भी हिम्मत मिलती है। परिस्थितियों के अनुसार कौशल निखार से मिला आत्मविश्वास अनमोल होता है। ऐसे भरोसे से लंबे मजबूत, हर हाल में कुछ बेहतर करने का मार्ग खोज लेता है। समझना मुश्किल नहीं कि फील्ड चाहे कोई भी हो, योग्यता के मोर्चे पर बेहतर की ओर बढ़ते जाना कभी व्यर्थ नहीं जाता। *



कवर स्टोरी/ डॉ. मोनिका शर्मा

जो से बदलते इस दौर में नई सोच ही नहीं न्यू एज स्किल्स भी आवश्यक हैं। आज के युवाओं को सेल्फ डेवलपमेंट की सोच में व्यक्तित्व ही नहीं कौशल को भी रखना होगा।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का अनुमान है कि 2030 तक 85 फीसदी ऐसी नौकरियां मौजूद होंगी, जो बिल्कुल नए क्षेत्रों से जुड़ी होंगी। यानी, रोजगार के ऐसे फील्ड और अवसर, जो अभी तक अस्तित्व में नहीं हैं। इसलिए युवाओं में एडॉप्टिविलिटी और नया सीखने की सोच जरूरी है। देखने में आ रहा है कि सरकार और कंपनियों की निरंतर कौशल विकास की जरूरत पर बल दे रही हैं। असल में तकनीकी तरक्की और कॉर्पोरेट दुनिया के तेजी से बदलते परिवेश में नए लोगों को ही नहीं पहले से जुड़े कर्मचारियों को भी लगातार नई स्किल्स सीखनी जरूरी है।

बदलते हालातों से तालमेल

बदलाव के प्रति खुला रख और बदलती परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठाने की सोच आज के समय में बहुत आवश्यक है। एडॉप्टिविलिटी से जुड़ा यह भाव वह सॉफ्ट स्किल है, जिस पर सीखने-समझने की लगातार चलने वाली प्रक्रिया टिकी होती है। असल में एडॉप्टिविलिटी का मतलब

मिलते हैं अनेक फायदे

उम्र के हर पड़ाव पर ही कुछ नया सीखना या सीखते रहना आत्मविश्वास की सीगात देता है। बात जब काम-काजी दुनिया में अपनी जमीन पुख्ता करने में जुटे युवाओं की हो तो, यह पहलू और अहम हो जाता है। असल में अपनी स्किल्स

डेवलप होती है पर्सनालिटी

फॉर्मल डिग्री के बाद भी कुछ नया सीखते रहना व्यक्तिगत विकास में भी सहायक होता है। नए स्किल्स सीखना अपने ज्ञान को बढ़ाना है। अपनी कार्यक्षमता को बेहतर करना है। समय के साथ चलते रहने की सोच को सही दिशा देना है। खासकर सॉफ्ट स्किल्स को बेहतर करना अच्छी निर्णय क्षमता, प्रभावी कम्युनिकेशन और समस्याओं का समाधान तलाशने में मददगार साबित होता है। ऐसे सभी पहलू व्यक्तिगत विकास से ही जुड़े होते हैं। यही बातें युवाओं की पर्सनालिटी को इंप्रोसिव बनाती हैं। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार, व्यक्ति की पर्सनालिटी उसके स्थाई व्यवहार, विचार, इमोशनल पैटर्न और क्षमताओं को लिए होती है। कॉर्पोरेट बिहेवियरल थैरेपिस्ट और 'द फील गुड जर्नल' के लेखक लुडोविका कोलेला के मुताबिक व्यक्तिगत, व्यवहार और विचार पैटर्न का एक संयोजन होता है, जो समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर होता जाता है। ऐसे में पर्सनल ग्रोथ और पर्सनालिटी डेवलपमेंट, दोनों ही सिस्टमेटिक ढंग से कुछ नया सीखते रहने से गहराई से जुड़े हैं। साथ ही खुद को सक्रिय रखने के लिए भी न्यू स्किल्स सीखना आवश्यक है। इस तरह नया स्किल, कठिन फील्ड में तो बेहतर से जुड़ा ही है, युवाओं के व्यक्तिगत विकास को भी अहम पहलू है।



अपनी बिजी लाइफ में भी कुछ पल हों दोस्तों के लिए

रिलेशनशिप / संस्था सिंह

हर रोज सुबह घर से निकलकर पूरा दिन ऑफिस में काम करने के बाद ट्रैफिक और भीड़ की मुश्किलें झेलने के बाद घर पहुंचकर आप अपने कंफर्टेबल जॉन में आ जाते हैं। अपने लिए चाय बनाते हैं और किसी किताब को पढ़ने या कोई मनपसंद फिल्म देखने की सोचते हैं। तभी आपके दोस्त का फोन आता है, जिसकी आपके साथ काफी दिनों से मुलाकात नहीं हुई है। वह आपको रात के समय फिल्म देखने के लिए बोलता है तो आप कहते हैं कि नहीं, अब मेरा कोई मूड नहीं है। लेकिन दोस्त 10-15 मिनट के बाद आपको लोने के लिए आ जाता है। मन नहीं होने के बावजूद आप फिल्म देखने चले जाते हैं। लंबे समय के बाद दोस्त से मिलकर, फिल्म देखकर, उसके साथ वक्त बिताना आपको बहुत अच्छा लगता है। क्या आपने भी ऐसा महसूस किया है?

वैसे तो आज के दौर में हर व्यक्ति समय की कमी का रोना रोता रहता है। लेकिन इस बिजी लाइफ में भी अगर कुछ पल आप अपने दोस्तों के साथ बिताते हैं तो इसके कई तरह के फायदे आपको मिलेंगे, जीवन में हमेशा जीवन्तता बनी रहेगी।

तनाव होता है कम: यह सच है कि आज के समय में घर से ऑफिस और ऑफिस से घर की व्यस्त दिनचर्या में आपको दोस्तों से मिलने का ख्याल ही नहीं आता है। थकान और तमाम उलझनों के कारण उनके लिए समय निकालना आपके लिए संभव भी नहीं होता। लेकिन विभिन्न सर्वेक्षण इस बात का दावा करते हैं कि अपनी व्यस्त दिनचर्या में भी दोस्तों के लिए वक्त निकालना, आपको काफी हद तक तनावमुक्त करता है। दोस्तों से मिलना, उनके साथ समय बिताना उस समय और जरूरी हो जाता है, जब आप किसी तरह की समस्या से जूझ रहे होते हैं। जाहिर सी बात है, दोस्त के साथ मिलने पर आप उनके साथ अपनी समस्या शेयर करते हैं। आपका दोस्त आपकी समस्या को ध्यान से सुनता है और उसे नए तरीके से देखने और समझने के लिए आपको बहुत सारे नई बातें बताता है, जिससे आपको अपनी वो छोटी सी समस्या जितनी पहले बड़ी लग रही थी, अब और छोटी दिखती है।

तनाव में है और वह खुद अपने को घर में बंद कर लेता है, अलग-थलग रहकर वह चिड़चिड़ा और तनावग्रस्त हो जाता है तो यही वह समय है, जब आप उसको उसकी बंद दुनिया से बाहर लाकर अपना सहारा दे सकते हैं। भले ही आजकल मोबाइल फोन, व्हाट्सएप कॉल, ई-मेल या एसएमएस के जरिए हम दोस्तों से कनेक्ट होते हैं, लेकिन वचुअल दुनिया से निकलकर आमने-सामने की बातचीत का कोई विकल्प नहीं होता।

मिलने की करें पक्की प्लानिंग: हम अक्सर अपने दोस्तों से मिलने की प्लानिंग तो बहुत करते हैं, लेकिन मिल नहीं पाते। इसके लिए हर बार की मीटिंग के बाद अगली बार मिलने की एक तारीख निर्धारित कर लें और उसके लिए किसी भी सूरत में समय निकालें। जीवन की आपा-धापी के बीच दोस्तों के लिए समय जरूर निकालें तो अगली बार जब आपसे कोई कहे कि चलो मिलते हैं, इसे एक अनिश्चित समय के लिए न टालें। मोबाइल फोन निकालकर कैलेंडर देखकर तुरंत पहले से एक तारीख तय कर लें और अपने शेड्यूल को उसी हिसाब से अडजस्ट करके अगली बार जरूर मिलें। *



लाइफस्टाइल शैलेट सिंह

कि सी ने सच ही कहा है, चलती का नाम जिंदगी है। लेकिन कभी-कभी अपनी जिंदगी से बोरियत महसूस होने लगती है। बोर होने का मतलब है रुकावट, थकावट, कल्पनाहीनता वगैरह-वगैरह। सवाल है, ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? हमें समझना होगा कि जब तक हम कल्पनाशील नहीं होंगे, बोरियत को दूर करने की चेष्टा नहीं करेंगे, तब तक बोरियत हमें अपने चंगुल में जकड़े रखेगी। बोरियत होने के दौरान हमें कोई भी चीज अच्छी नहीं लगती। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि बोरियत एक किस्म का डिप्रेशन है। इसलिए जैसे ही आप बोरियत महसूस करें तुरंत समझ जाए कि आपके साथ कुछ गड़बड़ है।



बोरियत का मतलब: आमतौर पर बोरियत एक जैसी स्थिति से होती है। एक ही तरह के खाने से, एक ही तरह के कपड़ों से, एक ही तरह के काम से, एक ही जगह रहने से, एक जैसी बातों से और एक जैसे रिश्तों से। कुल मिलाकर बोरियत की तह में है एकरसता। अतः

बोरियत को कटें बाय-बाय जिंदगी में भरें नई उमंग

वजहें अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन बोरियत की फीलिंग कमी न कमी सभी को होती है। ऐसे में उसकी वजह तलाशें, उसका समाधान करें और जिंदगी को नई उमंग के साथ जीना शुरू करें।

जीवन में एकरसता से बचना चाहिए। क्यों होती है बोरियत: यह कोई बंधा-बंधाया नियम नहीं है कि बोरियत वही महसूस करेगा, जो शादी-सुगाया हो। आजकल काम-काजी जीवन से जुड़ा रही युवा लोग भी बोरियत के चंगुल में बहुत जल्दी आ जाते हैं। वे चाहते हुए भी इससे दूर नहीं हो पाते। इसका सीधा सा जवाब यह है कि उनके पास सोशल होने का समय नहीं होता है। दोस्तों से झगड़ने का समय नहीं है। अपनों से बात करने का समय नहीं है। पार्टी करने का समय नहीं है। समय के अभाव के चलते बोरियत हमारी जिंदगी में गहरे तक घर कर गई है। बोरियत बड़े पैमाने पर प्रेमियों के संबंधों में देखने को मिलती है। हैरानी की बात यह है मौजूदा समय में बोरियत ने सबसे ज्यादा युवा कपल को ही घेरे रखा है, क्योंकि उनके पास एक-दूसरे के लिए समय नहीं है। इस तरह उनके जीवन में एकरसता बहुत आसानी से आ जाती है। वे ऊब से भर जाते हैं।

ऐसे करें बोरियत दूर: पुरुषों को यह समझना चाहिए कि आमतौर पर हर महिला की जिंदगी में उसका प्यार सबसे ज्यादा मायने रखता है। चाहे उसके पास करने को बहुत कुछ हो, चाहे उसके पास सोचने को बहुत कुछ हो, बावजूद इसके उनके जीवन में अपना पार्टनर सबसे खास होता है। लेकिन जैसे ही उसे महसूस होने लगे कि उसका पार्टनर काम के दबाव के चलते उसे नजरअंदाज कर रहा है तो वह गहरे तक अवसादग्रस्त हो जाती है। वे मनोवैज्ञानिक तौर पर बुरी तरह आहत हो जाती हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि मन ही मन कुदना स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। इसलिए पुरुषों को चाहिए कि वे अपनी पार्टनर को समय दें और अपने जीवन से बोरियत दूर रखें।

इन पर भी करें अमल: कपल्स के लिए यह भी जरूरी है कि हमेशा रोमांटिक बने रहें। चाहे स्थितियां कैसी भी क्यों न हो, अपने पार्टनर का सम्मान करें और उसे अपना पूरा समय दें। खासतौर पर पुरुषों को चाहिए कि वे अपनी पार्टनर को जरा भी नजरअंदाज न करने के लिए हमेशा खुद में नए-नए बदलाव करते रहें। कभी-कभी घर को भी नया लुक दें। बोरियत से दूर हुआ जा सकता है। लड़कियों के लिए खुद को सजाना हमेशा

दिलचस्पी भरा होता है। बोरियत घेर रही हो तो खुद को संवारें। यही नहीं रोमांसपूर्ण आकर्षण बनाए रखने के लिए कोशिश करें कि वही ड्रेस पहनें जो एक-दूसरे को अच्छे लगें। अचानक का स्पर्श भी आकर्षण बढ़ाता है, इसलिए मौका बे मौका एक-दूसरे को चुपके से छुएं जब दूसरा किसी और काम में खोया हो। इस तरह से दोनों के बीच लगाव बना रहेगा, जो बोरियत से दूर रखती है। जो लोग सिंगल हैं, वे अपने दोस्तों के साथ आउटिंग और हैंगआउट कर सकते हैं। बोर शब्द बेहद सामान्य प्रतीत होता है और लगता है कि कुछ घंटों में ही हम सामान्य हो जाएंगे। लेकिन ऐसा नहीं हो पाता, क्योंकि बोरियत दीमक की तरह है जो धीरे-धीरे अंदर की जीवन्तता को निचोड़ लेती है। इसलिए अपने आस-पास के माहौल में भी निरंतर तब्दीलियां करें और रिश्तों में हमेशा गर्मजोशी बनाए रखें। *



लिए हमेशा खुद में नए-नए बदलाव करते रहें। कभी-कभी घर को भी नया लुक दें। बोरियत से दूर हुआ जा सकता है। लड़कियों के लिए खुद को सजाना हमेशा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान मूण्ड

शोधपरक-संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास का विधिवत विवरण वर्ष 1826 से मिलता है, जब 'उदंत मार्टट' साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम से जुगल किशोर शुक्ल ने इसकी शुरुआत की। इसके लगभग 50-55 वर्ष के बाद ही वर्ष 1882 में हिंदी बाल पत्रकारिता की भी नींव पड़ी। उसके बाद से लेकर इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक तक पहुंचने की अपनी यात्रा में बाल पत्रकारिता, किन-किन सोपानों से होकर गुजरी, किन विधियों ने बाल पत्रकारिता को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और किन प्रमुख बाल पत्रिकाओं ने बाल पाठकों को आकृष्ट करने में महती भूमिका निभाई, इन तमाम पक्षों पर विस्तार से और पूरी प्रामाणिकता के साथ ब्योरा प्रस्तुत करती है, कुछ समय पूर्व छपकर आई पुस्तक-हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास। इसे सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने लिखा है। इस किताब को कुल पांच अध्यायों में बांटा गया है। पहले अध्याय में वर्ष 1882 से 1947 तक, दूसरे अध्याय में 1948 से 1960 तक, तीसरे अध्याय में 1961 से 2000 तक, चौथे अध्याय में 2001 से अब तक की बाल पत्रकारिता पर विहंगम दृष्टि डाली गई है। पांचवें अध्याय में हस्तलिखित बाल पत्रिकाओं का दुर्लभ विवरण दिया गया है। परिशिष्ट में सौ से अधिक बाल पत्रिकाओं के मुख पृष्ठ का संकलन लेखक के समर्पण और अथक परिश्रम को सिद्ध करता है। कुल मिलाकर यह एक शोधपरक-संग्रहणीय किताब है। *

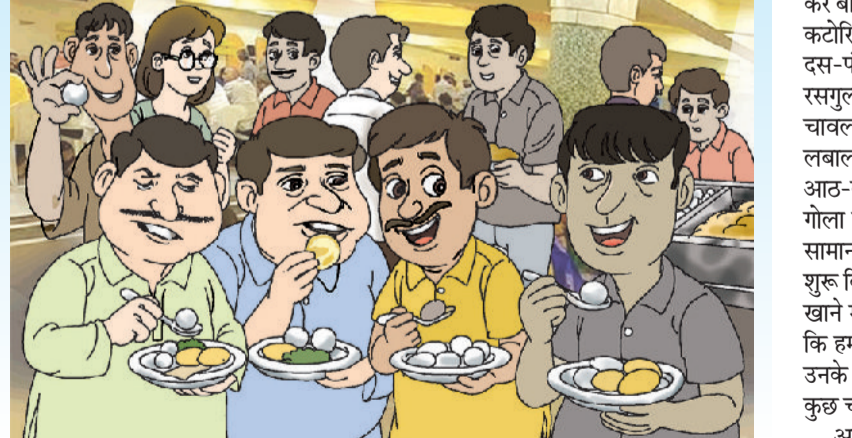
पुस्तक: हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास, लेखक: डॉ. सुरेंद्र विक्रम, मूल्य: 600 रुपए, प्रकाशक: भावना प्रकाशन, दिल्ली

व्यंग्य / रमेश सैनी

मलाल बहुत सहनशील सहिष्णु लंबी सोच वाले व्यक्ति हैं। उनकी सोच बहुत उदारवादी है। जीना ऐसा ना कोई से दोस्ती ना काहू से बैर। जहां काम पड़े अपना, अपना लो भले हो गैर। यह उनके जीवन का फलसफा है। वे रोज सुबह चाय-पान के बाद अखबार पढ़ते हैं। उसमें भी सबसे पहले सिटी पेज में साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक कार्यक्रमों की सूचना पढ़ते हैं। लंबे अनुभव ने उन्हें सिखा दिया है कि किस आयोजन में स्वरुचि भोजन की व्यवस्था है। अनेक बार यह संयोग ही जाता है कि एक ही दिन में दो-चार आयोजन स्वरुचि भोजन वाले की संभावना होती है। तब यह कयास लगाते हैं कि सबसे अच्छा भोजन कहाँ पर होगा? तब वे उस आयोजन में ठाठ-बाट के साथ सम्मिलित हो जाते हैं। वे साहित्यिक, धार्मिक और राजनीतिक आयोजनों के हिसाब से ड्रेस का चयन करते हैं। रामलाल जी अभिनय कला में मास्टर हैं। जहां जैसी जरूरत पड़ी, वैसे अपने को ढाल लेते हैं। वे कुछ दिन पहले एक साहित्यिक आयोजन में मिल गए। आजकल आयोजन में भी भीड़ जुटाने के लिए स्वरुचि भोजन रख लेते हैं। ऐसे में आयोजक को लगता है कि काफी भीड़ जुटी है और आयोजन सफल हो गया है। आयोजक भी श्रोताओं की सहनशक्ति, धैर्य और विश्वास की परीक्षा लेते हैं, उन्हें लगता है अगर शुरुआत में ही भोजन रख दिया तो लोग खाकर आयोजन से निकल लेंगे। इस वजह से कार्यक्रम के बाद भोजन रखते हैं। पर आयोजक डार-डार और श्रोता पात-पात। कुछ लोग समूह

भूखे भजन न होय गोपाला

अब सब लोग गोला बनाकर खड़े हो गए और एक-दूसरे का सामान आपस में बांटने लगे। फिर सबने खाना शुरू किया। खाते-खाते बात करने लगे, 'आज खाने में बहुत मशक्कत हुई। इसे कह सकते हैं कि हम लोग मेहनत करके ही खाते हैं।'



बनाकर आयोजन को सफल बनाने में योगदान देते हैं। ऐसे समूह में जो चतुर-चालाक और समझदार किस्म के लोग होते हैं, उन्हें आयोजन में शुरुआत में भेज देते हैं। उन्हें अकल होती है कि आयोजन कब खत्म होगा उसका अनुमान लगा लेते हैं। फिर वे कार्यक्रम खत्म होने के आधा-पौन घंटा पहले फोन कर देते हैं। तब उनके लोग भोजन प्रारंभ होने के पहले भोजन स्थल पर पहुंच जाते हैं। रामलाल जी इसी तरह वर्षों से आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

उस रोज भी आयोजन समाप्त होने पर, जैसे ही स्वरुचि भोजन आरंभ हुआ वहां उपस्थित अधिकांश लोग हमलावर के रूप में भोजन के स्टॉल पर टूट पड़े। मैं भी भीड़ में लग

गया और सबके साथ धक्के खाकर भोजन के स्टॉल तक पहुंच गया। फिर धक्के से आगे बढ़ा तो सलाद, अचार और पापड़ के पास पहुंचा। मेरे आगे खड़े सज्जन मेरी दयनीय स्थिति को देखकर द्रवित हो गए और टमाटर के आठ-दस टुकड़े, दस-बारह पापड़ के टुकड़े मेरी प्लेट में रख दिए। फिर उन्होंने मुझे भर अचार के टुकड़े मेरी प्लेट पर पटक दिए। मैं वहीं रुककर उन्हें कातर निरीह नजरों से देखने लगा। पर भीड़ को मेरा इस तरह रुककर देखना पसंद नहीं आया और मुझे धक्का मार कर लाइन से अलग कर दिया। फिर मैंने अपनी नजरें चारों ओर घुमाई, शायद कोई पहचान वाला मिल जाए। तब देखा रामलाल आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। काफी कशमकश के बाद वे हार मान गए और

गया। मुझे आश्चर्य हुआ। एक ही जगह से बाहर कैसे आ गया? उस आदमी ने आगे खड़े दो-तीन लोगों को संकेत किया। उन्होंने भी संकेतों में अपना अभिप्राय बताया, फिर वे लोग एक-एक कर बाहर आकर खड़े हो गए। मैंने देखा एक की कटोरियों में पनीर की सब्जी भरी है और साथ में दस-पंद्रह रोटियां। दूसरे की कटोरियों में रसगुल्ला ही भरे पड़े हैं और तीसरे की प्लेट में चावल था उसे पुराना कहा जाए पूरी तरह लबाबल भर हुआ है। चौथे आदमी की प्लेट में आठ-दस कटोरियों में खीर थी। अब सब लोग गोला बनाकर खड़े हो गए और एक-दूसरे का सामान आपस में बांटने लगे। फिर सबने खाना शुरू किया। खाते-खाते बात करने लगे, 'आज खाने में बहुत मशक्कत हुई। इसे कह सकते हैं कि हम लोग मेहनत करके ही खाते हैं।' मैं भी उनके साथ खड़ा था। उन्होंने मुझ पर दया कर कुछ चीजें मेरी प्लेट में रख दीं।

अब सबके साथ मैं भी खाने लगा पर धीरे-धीरे। तब उनमें से एक ने कहा, 'भाई साहब, संकोच मत करिए, दिल खोलकर खाइए। हम मेहनत का खा रहे हैं। आप तो निश्चित होकर खाएं। इस सुरुचि भोजन को हम लोग सहभागी भोजन बनाकर एक पिकनिक सा आनंद लेते हैं।' तब मैंने उनसे कहा, 'आज का कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा।' उनमें से दूसरा बोला, 'कार्यक्रम! हमें तो समझ नहीं आया, हमारा पूरा ध्यान कार्यक्रम के बाद भोजन में ही रहा। भोजन अच्छा है। कार्यक्रम अच्छा। अथवा सब बेकार है। आखिर हम लोग खाना खाने के लिए ही तो जीते हैं और जीने के लिए ही खाते हैं। हमारे यहां कहावत है-भूखे भजन न होय गोपाला।' यह कहते चुप होकर मुझे देखने लगे और मैं उन्हें *

अनोखा शहर

शिखर चंद जैन

भारत के पड़ोसी मुल्क चीन का शहर हार्बिन अपने आप में कई सारी खूबियां समेटे हुए है। 'आइस सिटी' यानी 'बर्फ का शहर' नाम से मशहूर यह शहर अपने ठंडे-बर्फाले वातावरण के साथ-साथ यहां के दर्शनीय स्थलों और विभिन्न आयोजनों की वजह से दुनिया भर में मशहूर है।

कभी-कभी आपके मन में ख्याल आता होगा कि कितना अच्छा हो कि इस चिलचिलाती धूप और झुलसा देने वाली गर्मी से बचने के लिए हम किसी बर्फ के शहर में पहुंच जाएं। यह सिर्फ किस्सों-ख्यालों की बात नहीं है। दुनिया में वास्तव में मौजूद है एक ऐसा ठिकाना जो कहलाता है, बर्फ का शहर। जी हां, हम बात कर रहे हैं चीन में बसे अनूठे शहर हार्बिन की। हार्बिन का इतिहास: इस अनूठे शहर की स्थापना रूस द्वारा एक बस्ती के रूप में की गई थी। इसका निर्माण व्लादिवास्तोक और रूसी पोर्ट आर्थर (अब डालियान) के बीच रेलवे



(1896-1904 में निर्मित) को सपोर्ट देने के लिए किया गया था। यह कभी सोंगहुआ नदी पर स्थित एक साधारण गांव था, जहां के वाशिंग्टन की आजीविका का मुख्य साधन मछली पकड़ना था। बाद में बड़ी संख्या में रूसी और यूरोपीय प्रवासी हार्बिन में आए, जिससे शहर में विदेशी संस्कृति और स्वाद आया। ये लोग अपने साथ अपनी यूरोपीय परंपराएं और मान्यताएं भी लेकर आए। इन्हीं सब कारणों से हार्बिन का रंग-रंग और यहां की संस्कृति बदली।

मिली-जुली संस्कृति: 'आइस सिटी' यानी 'बर्फ का शहर' के नाम से मशहूर हार्बिन, चीन के हेइलॉंगजियांग प्रांत की राजधानी है। यहां

बहुत अजब-अनूठा है आइस सिटी हार्बिन



की संस्कृति, वास्तुकला और जीवनशैली रूस, जापान समेत यूरोप और एशिया के कई देशों से प्रभावित है। हार्बिन पर्यटन की दृष्टि से दुनिया के लोकप्रिय स्थलों में से एक है। वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने जैसे- पुराना क्वार्टर, सेंट सोफिया कैथेड्रल, सेंट्रल एवेन्यू (पैदल यात्री सड़क), स्टालिन पार्क आदि यहां के खास आकर्षण हैं।

इस वजह से रहता है ठंडा: आप सोच रहे होंगे कि हार्बिन का मौसम इतना बर्फाला, इतना ठंडा क्यों है? दरअसल, साइबेरिया और मंगोलियाई पठार से ठंडी हवा पूर्व और दक्षिण की ओर यानी सीधे हार्बिन के ऊपर से बहती है, जिससे हार्बिन एक 'बर्फाला शहर' बन जाता है। इसके अलावा, हार्बिन एक तटीय शहर नहीं है। यह जापान सागर से 500 किमी से अधिक दूर है, इसलिए प्रशांत महासागर की गर्म धाराओं से कम ही प्रभावित होता है। इसलिए हार्बिन पश्चिमी यूरोप और जापान के शहरों की तुलना में अधिक ठंडा होता है। हार्बिन में सबसे ठंडा महीना जनवरी होता है, जब यहां का तापमान औसतन माइनस 18 डिग्री सेल्सियस (0 डिग्री फारेनहाइट) होता है।

हार्बिन आइस एंड स्नो वर्ल्ड: यहां का

प्रमुख रेलवे केंद्र

हार्बिन पूर्वोत्तर चीन का प्रमुख उत्तरी रेलवे केंद्र है। यहाँ ही यह चीन और पूर्वोत्तर एशिया को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण रेलवे केंद्र है। चीन के पूर्वी रेलवे के निर्माण के क्रम में हार्बिन का विकास हुआ। इसलिए चीनी कहते हैं कि हार्बिन ट्रेनों द्वारा परिवहन किया जाने वाला शहर है।

सबसे लोकप्रिय स्थान हार्बिन आइस एंड स्नो वर्ल्ड है, जो एक जमे हुए डिजिनालैंड की तरह दिखता है। इसमें आप बर्फ के महल, कार्टून, मूर्तियां देख सकते हैं और बर्फ के खेल और गतिविधियों की विविधता का आनंद ले सकते हैं। हार्बिन का आइस पार्क लगभग 8,10,000 वर्ग मीटर में फैला है, जो असंख्य मानव-निर्मित बर्फ की मूर्तियों, महलों एवं अन्य आकृतियों से सुसज्जित है। सूर्यास्त के बाद कृत्रिम रोशनी से जगमगाती ये मूर्तियां और आकृतियां पारंपरिक चीनी शैली की इमारतों से लेकर आकर्षक परीकथा महल और बॉजिंग के स्वर्ग के मंदिर की याद दिलाती हैं। इसे सोंगहुआ नदी की लगभग 250,000 घन मीटर बर्फ से तैयार किया गया है। यहां दुनिया के सबसे बड़े बर्फ महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

अनोखा है बर्फ महोत्सव: हार्बिन अंतरराष्ट्रीय बर्फ और बर्फ मूर्तिकला महोत्सव यहां आने वाले पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करता है। यहां 300 फुटबॉल मैदानों के बराबर क्षेत्रफल में एक 'आइस सिटी' बनाई जाती है, जिसमें लगभग 500 मिलियन



डॉलर की लागत आती है। इस बर्फाले पर्यटन के बीच, पर्यटक स्कीइंग के साथ-साथ बर्फ पर बाइकिंग का भी आनंद ले सकते हैं। बर्फ महोत्सव के दौरान यहां का तापमान माइनस 35 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। हार्बिन का बर्फ महोत्सव पर्यटकों और फोटोग्राफरों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

अन्य गतिविधियां: बर्फ महोत्सव में पर्यटक पांच अलग-अलग थीम पार्कों का भ्रमण कर सकते हैं। ये थीम पार्क हैं- सन आइलैंड इंटरनेशनल स्नो स्कल्पचर आर्ट एक्सपो, हार्बिन आइस एंड स्नो वर्ल्ड, हार्बिन वांडा आइस लैंटन वर्ल्ड, झाओलिन पार्क आइस लैंटन आर्ट फेयर और सोंगहुआ रिवर आइस एंड स्नो कान्फेस। सन आइलैंड इंटरनेशनल स्नो स्कल्पचर आर्ट एक्सपो में दुनिया भर के कलाकारों द्वारा बनाई गई विशाल बर्फ की मूर्तियां प्रदर्शित की जाती हैं। हार्बिन वांडा आइस लैंटन वर्ल्ड और झाओलिन पार्क आइस लैंटन आर्ट फेयर में आकर्षक आइस लैंटन प्रदर्शन किए जाते हैं। हार्बिन वांडा आइस लैंटन वर्ल्ड में एक हजार से

मिला संगीत शहर का खिताब

हार्बिन में संगीत की ऐतिहासिक एवं समृद्ध परंपरा रही है। यहां संगीत को बढ़ावा देने के लिए समग्र-समग्र पर संगीत के विविध आयोजन किए जाते हैं। साल 2010 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे संगीत का शहर घोषित किया गया था।



अधिक रोशन लालटेन और सैकड़ों मूर्तियां प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें स्थानीय लोगों और कॉलेज के छात्रों द्वारा जटिल नक्काशीदार आर्ट्स शामिल हैं। झाओलिन पार्क, जहां आइस लैंटन शो और गार्डन पार्टी का आयोजन किया जाता है, शाम को रंगीन लालटेन से आंगतुकों को चकाचौंध कर देता है, साथ ही यहां लाइट बर्फ-नक्काशी प्रतियोगिताएं भी होती हैं। रोमांच पर्यटन करने वालों के लिए, बर्फ की चट्टान पर चढ़ना, बर्फ पर तीरंदाजी, बर्फ पर गोल्फ और स्नोबॉल की लड़ाई जैसी गतिविधियां भी यहां होती हैं। हार्बिन आइस एंड स्नो वर्ल्ड, इस आयोजन का सबसे जीवंत स्थल है, जहां स्केटिंग, स्कीइंग, बर्फ की भूल-भुलैया और बर्फ पर बाइकिंग की सुविधा भी है। रोमांच चाहने वाले सुपर स्लाइड पर रोमांचक सवारी का आनंद ले सकते हैं, जिनमें से कुछ 1,000 फीट तक ऊंचे हैं। *



सेल्फ ग्रोथ के लिए अच्छी नहीं दूसरों में कमी खोजने की आदत

मोटिवेशन

शिखर चंद जैन

एक कहावत है कि अगर आपको हर किसी में खोटी और कमी नजर आती है तो कमी दूसरों में नहीं बल्कि आप में है। इसका मतलब यह है कि आप ऐसे लोगों में से एक हैं, जिन्हें चांद में दाग दिखता है लेकिन उसका धवल प्रकाश, शीतल चांदनी और लुभावना आकार नजर नहीं आता। आपको गुलाब में कांटे दिखते हैं, लेकिन उसकी मनभावना खुशबू को आप महसूस नहीं कर पाते। इसके विपरीत जब आप दूसरों की विशेषताएं उनकी सफलता, समृद्धि और अच्छी आदतों को देखना और जम्ब करना सीख जाते हैं तो आप खुद की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने लगते हैं। आप आगे बढ़ना चाहते हैं तो दूसरों की अच्छाइयों को अपनाएं और अपनी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करें।

कोसना बंद करें: कुछ कारणों से अगर आप वॉलेंट तरक्की नहीं कर पाए हैं या अपने लक्ष्य हासिल नहीं कर पाए हैं तो इसके लिए दूसरों को दोष देना या अपनी तकदीर को कोसना बंद करें। हर सुबह एक नई ऊर्जा, स्वप्रेरणा और फोकस के साथ उठें और अपनी तरक्की के लिए स्वयं सचेत होने का प्रण लें। नकारात्मक विचारों को मन से निकाल फेंकें और दूसरों को नियंत्रित करने के ख्याल मन में लाने की बजाय अपने क्रिया-कलाप को नियंत्रित करें ताकि आप सही दिशा में कार्यशील रहें।

नजरिया रखता है मायने: हमारा दिमाग चीजों को कैसे देखता है उस पर भी हमारे जीवन का बेहतर होना निर्भर करता है। मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में कॉग्निटिव न्यूरोसाइंस की प्रोफेसर टेलीशेरोट कहती हैं कि जिंदगी को बेहतर बनाने के प्रयासों के साथ-साथ हमें इसे बेहतर तरीके से देखना भी सीखना होगा। इसके लिए हमें अपने आस-पास मौजूद हमारे घर में उपलब्ध उन चीजों और लोगों का महत्व समझना होगा, जो न होतों तो हमारा जीवन कैसा होता? फिर इस बात पर गौर करना होगा कि कौन से छोटे-छोटे बदलाव हमें बेहतर बना सकते हैं? एवरेज मानसिकता से उबरें: अगर आपको आगे बढ़ना है और उन चंद लोगों की सूची में खुद को देखना

कुछ लोग हमेशा दूसरों में कमियां खोजते रहते हैं। इससे वे स्वयं में जरूरी बदलाव नहीं कर पाते हैं। इस बैट हैबिट के वया नुकसान हो सकते हैं और इससे बचने के लिए वया करना चाहिए, बहुत उपयोगी सलाह।

सेल्फ ग्रोथ के लिए अच्छी नहीं दूसरों में कमी खोजने की आदत

है, जो आमजन से अलग और ऊपर है तो आपको 95 फीसदी लोगों की नहीं सफलता 5 फीसदी लोगों की आदतों को अपनाना होगा। जाने-माने मोटिवेशनल लेखक रॉबिन शर्मा ने अपनी पुस्तक 'द 5 एएम क्लब' में लिखा है कि अपने दिन की शुरुआत एक लक्ष्य और ऊर्जा के साथ करें। केवल मानसिकता और आशावाद पर ही निर्भर ना रहें। इन सबके साथ-साथ संतुलन पर भी ध्यान दें। अपने स्वास्थ्य, मन और आत्मा पर भी ध्यान दें और उनकी ताकत का इस्तेमाल करें। इस प्रवृत्ति से स्वयं को रोके: विशेषज्ञ कहते हैं कि हम अपने आस-पास के लोगों की बेकार में ही कमियां ढूँढते रहते हैं, जबकि उनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं

लोगों को जज ना करें

अक्सर व्यवहारगत कारण हमारी तरक्की की राह में रुकावट बनते हैं। सफल लोगों की कुछ खास आदतें विनमता, परोपकार और मिलनसारिता उन्हें आगे ले जाती हैं। व्हाट गॉट यू हिजर वॉलेंट गेट यू देयर के लेखक मार्शल गोल्डस्मिथ कहते हैं कि सफल लोगों के विचार ठोस होते हैं और उन्होंने अपने लिए ऊंचे मानक तय किए होते हैं। इसलिए अपनी आदतों के प्रति सजग रहें। लोगों को थैंक यू बोलना सीखें और खुबने की कला विकसित करें।

होता। इसके लिए आपको सतर्क रहना होगा। खासकर तब जब आप किसी के रूप, रंग और व्यवहार को लेकर नकारात्मक धारणाएं बना रहे होते हैं। मनोचिकित्सक कहते हैं कि जब आप किसी की आलोचना करें या कमियां निकालें तो सबसे पहले खुद का आकलन करें। इस आदत के नुकसान: हमेशा दूसरों में कमियां ढूँढने से आपकी सहानुभूति और समानुभूति से जुड़ी समझ और भावनाएं धुंधली पड़ सकती हैं। नए दृष्टिकोण के प्रति आपकी ग्रहणशीलता कम हो जाती है। आप यह सोच ही नहीं पाते कि आपसे अलग भी कोई सोच सही और उपयोगी हो सकती है। आप हमेशा तुरंत प्रतिक्रिया करने की ओर अधिक प्रवृत्त हो सकते हैं। आपको लगने लगता है कि आप किसी की जितनी ज्यादा कमियां ढूँढेंगे आपको उतना ही ज्यादा बेहतर महसूस होगा। इससे आपकी सोच प्रभावित होगी और ग्रोथ प्रभावित होगी। *



रोचक / अपराजिता

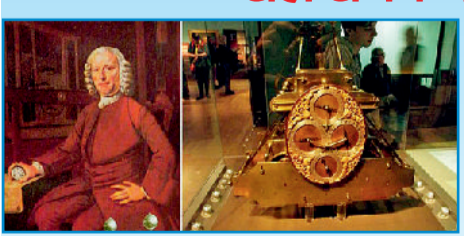
समय की सटीक गणना करना हमें जितना आसान लगता है, उतना होता नहीं है। इसमें कई फैक्टर्स काम करते हैं। समय की सटीक गणना करने की प्रक्रिया कब कैसे शुरू हुई, जानिए।

आज भी आसान नहीं है समय की सटीक गणना

अगर आपने कभी समय की सटीक सूक्ष्मता पर गंभीरता से नहीं सोचा तो एक मायने में कहना होगा कि आप समझदार और व्यवहारिक व्यक्ति हैं, क्योंकि भले आम आदमी के लिए आज टाइम या समय जानना बेहद आसान हो। हम मोबाइल से लेकर लैपटॉप तक कहीं भी एक नजर डालकर पलक झपकते समय जान लेते हैं। लेकिन अगर आप समय को भौतिक विज्ञान की नजर से समझने में रुचि रखते हैं तो समझ लीजिए आपके लिए सही समय जानना, वाकई रॉकेट साइंस जैसा जटिल हो जाएगा। जी हां, तकनीक के इस अतिविकसित काल में भी सही समय जानना और लगातार सही समय के साथ संपर्क में रहना कितना जटिल है, इसे वही लोग जानते हैं, जिन्हें हम टाइम कीपर कहते हैं।

इसलिए होता है कठिन: सटीक समय जानना इसलिए कठिन होता है क्योंकि समय की सटीकता केवल घड़ी देखने तक सीमित नहीं होती है, बल्कि यह वैश्विक संचार, नेविगेशन, वित्तीय लेन-देन और वैज्ञानिक अनुसंधानों से गहराई से जुड़ी हुई स्थिति है। टाइमकीपर के लिए यह एक

सही समय जानने की यात्रा



हूंसान को सटीक समय जानने की सुविधा कब और कैसे मिली? इस सवाल का जवाब है, प्राचीन काल में कई प्रयोगों के बाद यह सीमागत हासिल हुई है। पहले सूर्यघड़ी और जलघड़ी जैसी तकनीकों से समय मापा जाता था, लेकिन ये मौसम और भौगोलिक स्थितियों पर निर्भर हुआ करता था। इसके बाद आया यांत्रिक घड़ियों का युग (13वीं-14वीं सदी)। सबसे पहले यूरोप में यांत्रिक घड़ियां बनीं, लेकिन इनमें लाख कोशिशों के बावजूद कुछ मिनटों का फर्क रह जाता था। इन्हीं दिनों यानी अठारहवीं शताब्दी में समुद्री यात्रा में सटीक समय जानना अनिवार्य हो गया, क्योंकि तभी समुद्री जहाज अपनी सही स्थिति जान सकते थे। इस सिलसिले में सन 1761 में सॉन हैरिसन ने पहला समुद्री क्रोमोमीटर बनाया, जिससे सटीक समय मापना संभव हुआ।

समय का पहिया आगे बढ़ा फिर 19वीं सदी में रेलवे और टेलीग्राफ का युग आया। आगे चलकर ट्रेनों के समय समन्वय के लिए भी सटीक समय जानना जरूरी हो गया। सन 1884 में पहली बार वैश्विक समय-क्षेत्र यानी टाइम जोन बनाए गए। साथ ही इसी दौर में टेलीग्राफ नेटवर्क ने एक घड़ी को दूसरी से जोड़कर सही समय पहुंचाने में मदद की। सही समय जानने का अगला तरीका था परमाणु घड़ी। बीसवीं सदी का यह समय सचमुच अल्ट्रा-सटीक समय था। सन 1949 में पहली परमाणु घड़ी बनी, जिसने

माइक्रोसेकेंड स्तर की सटीकता दी। इससे भी आगे 1967 में सेसियम परमाणु घड़ी के आधार पर सेकेंड को परिभाषित किया गया। भला तब कौन जानता था कि आने वाले दिनों में जीपीएस और

इंटरनेट आने वाला है, जिसके लिए टाइम की नैनो सेकेंड तक की सटीकता की दरकार होगी। आज जीपीएस सैटेलाइट्स परमाणु घड़ियों का उपयोग करके हमें सटीक समय देते हैं। आज इंटरनेट टाइम प्रोटोकॉल से दुनिया भर के कंप्यूटर और स्मार्टफोन सही समय सिंक कर पाते हैं।

जंतु-जगत

रजनी अरोड़ा

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि पृथ्वी पर जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों की ज्ञात प्रजातियों की संख्या लगभग तेरह लाख है, जिनमें से हम तकरीबन 14 प्रतिशत के बारे में ही जानते हैं। लेकिन अब एक लाख से अधिक प्रजातियों पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। मानव की बढ़ती जरूरतों की खातिर जंगलों की अंधाधुंध कटाई, जीव-जंतुओं के प्राकृतिक आवास का अतिक्रमण, उनका अवैध शिकार और उनके विभिन्न अंगों की तस्करी या व्यापार, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन... ऐसी अनेक वजहों से कई जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियां गंभीर रूप से संकटग्रस्त हैं। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) की रेड लिस्ट, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ और अन्य जैव संरक्षण संगठनों के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार दुनिया में जीव-जंतुओं की एक लाख से अधिक प्रजातियां संकट में हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-



अमूर तेंदुआ: यह दुनिया का सबसे दुर्लभ तेंदुआ प्रजाति है, जो रूस और चीन के सीमावर्ती जंगलों में पाए जाते हैं। इनकी कुल संख्या केवल 100 के आस-पास बची है। इसके सुंदर धब्बेदार फर के लिए इसका शिकार किया जाता है। इसके अलावा जंगलों की कटाई और इन्फ्रैडिंग की वजह



विलुप्ति की कगार पर हैं ये जंतु प्रजातियां

दुनिया में कई जीव-जंतु की प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं। इनकी संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुके ऐसे ही कुछ संकटग्रस्त पशु-पक्षियों के बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

से भी इसका अस्तित्व संकट में है।

सुमात्रन गैंडा: यह दुनिया का सबसे छोटा और दो सींग वाला गैंडा है, जो अब केवल



इंडोनेशिया के कुछ इलाकों व सुमात्रा द्वीप में बचे हैं। इनके भी लगभग 80 सदस्य ही बचे हैं। शिकार और आबादी का विखंडन इसके लिए मुख्य खतरे हैं।

बोर्नियन-सुमात्रन ओरंग उटान: ये एशिया के वर्षावनों में पाए जाते हैं। जंगलों की कटाई (खासकर पाम ऑयल के लिए), शिकार और आगजनी की वजह से इनकी संख्या तेजी से घट रही है। इंडोनेशिया के सुमात्रा में

लगभग 14,000 ओरंग उटान बचे हैं।



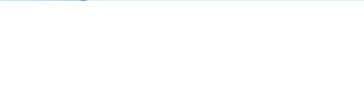
क्रॉस रिवर गोरिल्ला: यह अफ्रीका के कुछ जंगलों में पाया जाता है। ये अब मात्र 250-300 की संख्या में बचे हैं। आवास विनाश और शिकार की वजह से इनका अस्तित्व खतरे में है।

व्हेल शार्क: दुनिया का सबसे बड़ा स्तनपायी जंतु व्हेल शार्क, शिकार और समुद्री प्रदूषण के कारण संकट में है। दुनिया



में इनकी अनुमानित संख्या 10,000-20,000 के बीच है।

पेंगोलिन: एशिया और अफ्रीका में मिलने वाला यह स्केल्युकृत स्तनपायी दुनिया में सबसे ज्यादा तस्करी किया जाता है। ऊंचे दामों पर बिकने वाले इनके स्केल पाने की वजह से इनका शिकार किया जाता है, जिससे इनके विलुप्त होने का खतरा बढ़ गया है।



हॉक्सबिल टर्टल: इस समुद्री कछुए का शिकार इसके खूबसूरत कवच के लिए किया जाता है। समुद्री प्रदूषण और आवास विनाश भी इसके लिए खतरा है। दुनिया में इनकी अनुमानित संख्या 8,000-10,000 है।

अनुमान है कि पिछले दशक 10 लाख से ज्यादा पैंगोलिन तस्करी के शिकार हुए।

गंगा डॉल्फिन: भारत और पड़ोसी देशों की नदियों में पाई जाने वाली यह डॉल्फिन जल प्रदूषण, बांध और शिकार के कारण संकटग्रस्त है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश की नदियों में 3,500-4,000 डॉल्फिन रह गई हैं।

ग्रेट इंडियन वस्टर्ड: यह विशाल पक्षी राजस्थान और गुजरात के शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। इसकी संख्या अब 150 से भी कम रह गई है। यह भारत के सबसे संकटग्रस्त पक्षियों में गिना जाता है। बिजली के तारों से टकराना और अवैध शिकार इसके प्रमुख खतरे हैं। *

